

सच्चाई और ईमानदारी की राह कठिन हो सकती है, लेकिन अंत में वही सबसे बड़ा सम्मान और विश्वास दिलाती है।

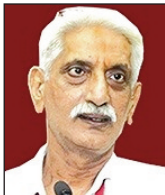
परिवहन विशेष - विशेष संपादकीय रिपोर्ट - जनहित, जनकल्याण एवं जनसूचना हेतु

जनहित के नाम पर छोटी दलाली बंद, पर बड़ी लूट का दरवाजा खुला - Vahan Auto-Approval कितना सुरक्षित?

सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय द्वारा जारी इस जनहित कार्य के प्रति पूर्ण विश्लेषण एवं परिवहन विशेषज्ञों के साथ हुए सवाल जवाब कल के प्रकाशन में होंगे प्रस्तुत

सड़क परिवहन मंत्रालय की 58 सेवाओं की Faceless योजना ने RTO के चक्कर तो खत्म किए, पर Total Loss और चोरी की गाड़ियों के लिए नया काला बाजार खोल दिया

- प्रधान संपादक संजय कुमार बाठला



भूमिका:

अच्छी मंशा, अधूरी तैयारी सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय ने 16

सितंबर 2022 को राजपत्र अधिसूचना S.O. 4353 (E) और 22 दिसंबर 2022 को GSR 901 (E) - नियम 55A से 55H जारी कर 58 नागरिक सेवाओं को पूरी तरह Faceless कर दिया। मकसद साफ था - “No middlemen, no delays”। केरल MVD ने 21 सितंबर 2026 से इसे 100% लागू भी कर दिया - “Vehicle ownership transfers go 100% automated via Vahan software, eliminating official intervention.”

जनता को लगा, अब RTO के चक्कर और 1000 रुपये की दलाली खत्म। पर हमारी पड़ताल में जो निकला, वह डराने वाला है। दलाली 1000 की थी, अब जो धोखा हो रहा है वह 3 लाख रुपये प्रति गाड़ी

का है।

तथ्य 1: अधिसूचना क्या कहती है? PIB प्रेस विज्ञप्ति PRID 1861573 के अनुसार - ‘58 citizen-centric services related to driving license, conductor license, vehicle registration, permit, transfer of ownership etc. can be now availed completely online, eliminating the need to visit the RTO, services can be availed with the help of Aadhaar authentication.’

और GSR 901 (E) के अनुसार - पुरानी गाड़ी बेचने वाले हर व्यापारी को अब Registered Vehicle Dealer (RVD) बनना होगा, Vahan पर Digital Traceability रखनी होगी। योजना कागज पर परफेक्ट है।

तथ्य 2: IRDAI पहले ही चेतावनी दे चुका है बीमा नियामक IRDAI ने अपने सर्कुलर में लिखा है जिसे मंत्रालय ने नजर अंदाज कर दिया -

“Salvage of the vehicle is being sold to scrap dealers without cancelling RC... documents are being misused like giving new identity to stolen vehicles by forging engine number and chassis number”

> “Less than 8% of stolen vehicles are recovered. A big chunk of the rest are being run with existing/destroyed engine/chassis numbers”

और दूसरा तथ्य - “Cancellation of RC is a must for total loss claim” - पर 90% बीमा कंपनियां IDV देकर भी RC Cancel नहीं करती।

मुख्य बिन्दु - 3 बड़े खतरे जो आम जनता पर मंडरा रहे हैं

खतरा 1: चोरी की गाड़ी को नई पहचान एक चोर ने Thar चुराई। उसी मॉडल की एक Thar बाद में Total Loss हो चुकी है, जिसकी RC बीमा कंपनी ने Cancel नहीं कराई। चोर उसी Total Loss गाड़ी की चेसिस प्लेट और RC कागज 50 हजार में कबाड़ी से खरीदता है और चोरी की गाड़ी पर लगा देता है। पहले RTO में अधिकारी चेसिस घिसकर देखता था, अब Vahan सॉफ्टवेयर Aadhaar OTP देखते ही Auto-Approve कर देता है। चोरी की गाड़ी कानूनी हो गई।

खतरा 2: कबाड़ माफिया का नया धंधा नियम कहता है - “RVSF shall be provided connectivity to verify records with stolen vehicles database held by NCRB and local Police before scrapping.” पर हकीकत में देश का

70% कबाड़ अनधिकृत यार्ड में कटता है। वे गाड़ी काटते नहीं, पाटर्स बेचते हैं। एक Total Loss गाड़ी के इंजन से 2 चोरी की गाड़ियां जिंदा हो रही हैं।

खतरा 3: गरीब खरीदार लुटेगा ऑटो-रिक्शा चालक रामू 2 लाख में सेकंड हैंड ऑटो खरीदता है। Vahan पर RC कलीन दिखती है। 6 महीने बाद क्राइम ब्रांच पकड़ लेती है - रयह तो 2024 में बाद में मरी हुई गाड़ी के कागज पर चल रही चोरी की गाड़ी है। “रामू की जमा पूंजी भी गई और रोजगार भी। Motor Vehicles Act धारा 55 कहती है - नष्ट वाहन की RC 14 दिन में सरेंडर करो, पर कोई नहीं करता।

निष्कर्ष: समाधान क्या है? - हमारी 4-सूत्रीय माँग यह संपादकीय विरोध के लिए नहीं, सुधार के लिए है। हम MoRTH और IRDAI से माँग करते हैं -

1. Auto-Approval से पहले Auto-Cancellation: बीमा कंपनी जैसे ही Total Loss का पैसा दे, Vahan को सूचना जाए और RC का स्टेटस ‘Total Loss - RC Cancelled & Locked’ हो जाए। जब तक Lock नहीं होगा, ट्रांसफर Auto-Approve नहीं होगा।

2. Vahan पर लाल बत्ती का अलर्ट: कोई भी व्यक्ति जब सेकंड हैंड गाड़ी का नंबर Vahan पर डाले तो पॉप-अप आए - “यह वाहन दिनांक XX को

Total Loss / Flood / Fire में नष्ट घोषित - RC Cancelled।” जनता को पता तो चले।

3. पाटर्स की QR ट्रेसिबिलिटी: इंजन और चेसिस का QR कोड RVSF द्वारा Destroyed मार्क हो। वही QR अगर दूसरी गाड़ी पर लगे तो Vahan उसे Auto-Block कर दे।

4. अनधिकृत और अधिकृत कबाड़ी पर अपराध का केस: कोई भी गाड़ी का पाटर्स बेचे तो उसे Motor Vehicles Act नहीं, बल्कि IPC धारा 411 (चोरी का माल रखना) के तहत अपराधी माना जाए। GSR 901 (E) का सख्त पालन हो।

अंतिम बात: छोटी दलाली 1000 रुपये की थी, जो गरीब से ली जाती थी। पर यह बड़ी जालसाजी 3 लाख की है, जो गरीब की जान भी ले सकती है, क्योंकि नष्ट गाड़ी की बाँड़ी पर जोड़ी गई गाड़ी कभी भी सड़क पर टूट सकती है।

सरकार ने आधा काम किया - Transfer को Faceless किया। अब आधा काम और करे - RC Cancellation, NCRB Validation और RVSF Traceability को भी Faceless और Compulsory जोड़े। तभी यह आदेश ‘जनहित’ कहलाएगा, नहीं तो इतिहास इसे ‘स्क्रेप माफिया हित’ आदेश के रूप में याद रखेगा।



दिल्ली को प्रदूषण मुक्त करने के लिए परिवहन विशेष समाचार पत्र की ओर से जनहित में अपील



पुराना ट्रक-बस बदलिए, नया वाहन खरीदिए। भारत सरकार की "परिवर्तन" योजना

योजना के लाभ

- ✓ रोड टैक्स में 100% छूट (10 साल)
- ✓ रजिस्ट्रेशन शुल्क पूर्ण माफ़
- ✓ 1 साल से पुरानी देनदारी माफ़
- ✓ ब्याज में 5% सब्सिडी 5 साल तक
- ✓ नई गाड़ी पर OEM 8% डिस्काउंट
- ✓ मासिक फ्यूल वाउचर ₹4800 तक / EV पर ₹2.56 लाख तक प्रोत्साहन



आवेदन एवं जानकारी के लिए:

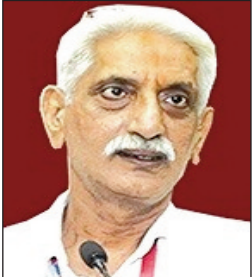
वेबसाइट: parivartan.parivahan.gov.in

संपर्क: 09811732095

*नियम व शर्तें लागू - यह योजना दिल्ली क्षेत्र में सीमित समय के लिए वैध

जनहित - पर्यावरण - तकनीक: भारतीय ड्राइवरलेस गाड़ी: जब दुनिया Tesla का इंतजार कर रही थी, भारत में 17वीं सदी से ही ऑटो-पायलट चल रहा है

AI का असली मतलब - Animal Intelligence | ड्राइवर स्लीपिंग मोड, 0% बैटरी, 0% पॉल्यूशन, 100% भरोसा



- प्रधान संपादक - संजय कुमार बाठला - परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

तस्वीर क्या कहती है - एक सड़क, दो बैल, एक बैलगाड़ी और उस पर बेखौफ सोया हुआ किसान। बैल खुद ही रास्ता देखकर चल रहे हैं, गाड़ी बिना स्टीयरिंग के मंजिल की ओर बढ़ रही है। यह लापरवाही नहीं, भारत का सबसे पुराना भरोसा है।

सोशल मीडिया पर इस तस्वीर को ‘भारतीय ड्राइवरलेस गाड़ी’ कहा जा रहा है और यह बिल्कुल सही है। हास्य में छिपा गंभीर संदेश

1. 17वीं सदी की टेक्नोलॉजी, 21वीं सदी से बेहतर: आज दुनिया की बड़ी-बड़ी कंपनियां अरबों रुपये ड्राइवरलेस कार पर खर्च कर रही हैं। सेंसर, लिडार, सैटेलाइट, सॉफ्टवेयर। लेकिन हमारे गाँव में यह

तकनीक सदियों से है। इसका नाम है - जान-पहचान। बैल को पता है घर कहाँ है, खेत कहाँ है, और तालाब कहाँ। उसे GPS की जरूरत नहीं, गाँव का देसी ज्ञान ही उसका नेविगेशन है।

2. AI = Animal Intelligence: हम Artificial Intelligence की बात करते हैं, यह Animal Intelligence है। यह बैटरी से नहीं, भूसे से चलती है। इसका धुआँ पॉल्यूशन नहीं, खाद बनता है। यह हँग नहीं होती, थकने पर बैठ जाती है। इसका सॉफ्टवेयर अपडेट - एक बाल्टी पानी और थोड़ा प्यार।

फीचर्स जो Tesla में भी नहीं:

- ड्राइवर स्लीपिंग मोड ऑन: किसान खेत में दिनभर काम करके थक गया है, बैल कहते हैं - तू सो जा, हम संभाल लेंगे।

- 0% बैटरी, 0% पॉल्यूशन: कोई चार्जिंग स्टेशन नहीं, कोई कार्बन उत्सर्जन नहीं। 100% पर्यावरण-मित्र।

- 100% भरोसा और ऑटो-ब्रेक सिस्टम: सामने गड्ढा आया तो बैल खुद रुक जाएंगे, किसी सेंसर की जरूरत नहीं। यह भरोसा सदियों में बना है।

- शून्य मेंटेनेंस कॉस्ट: कोई इंश्योरेंस नहीं, कोई चालान नहीं।

3. परिवहन विशेष का जनहित संदेश: यह तस्वीर हमें हंसाती जरूर है, पर सोचने पर भी मजबूर करती है।

* आज हम बुलेट ट्रेन की बात कर रहे हैं, अच्छी बात है। पर जिस देश की 60% आबादी आज भी गाँव में रहती है, वहाँ बैलगाड़ी आज भी सबसे भरोसेमंद ‘लास्ट माइल कनेक्टिविटी’ है।

* मोटर व्हीकल एक्ट के तहत बैलगाड़ी को भी वाहन माना गया है। हाईवे पर इसकी सुरक्षा भी जरूरी है। किसान सो रहा है क्योंकि वह थका है, लेकिन तेज रफ्तार ट्रक के लिए यह खतरा बन सकता है।

हमारी अपील:

- ग्रामीण सड़कों पर बैलगाड़ियों के लिए अलग लेन और रिफ्लेक्टर लगाना अनिवार्य हो।

- पशुओं के प्रति क्रूरता नहीं, बल्कि इस देसी तकनीक को ‘इको-फ्रेंडली ट्रांसपोर्ट हेरिटेज’ के रूप में सम्मान मिले।

आखिर में - दुनिया की सबसे महंगी ड्राइवरलेस गाड़ी भी वह सुकून नहीं दे सकती जो इस बैलगाड़ी पर सोने में है। क्योंकि यहाँ ड्राइवर सो रहा है, पर भरोसा जाग रहा है।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html |
tolwaindia@gmail.com,

आज का साइबर सुरक्षा विचार: EaseMyTrip सह-संस्थापक पर मनी लॉन्ड्रिंग के आरोप, ₹59.60 करोड़ के शेयर जब्त



पिकी कुड़ सह संपादक परिवहन विशेष

प्रवर्तन निदेशालय (ED) ने

EaseMyTrip के सह-संस्थापक निशांत पिट्टी के खिलाफ महादेव बेटिंग ऐप मामले में आरोपपत्र दाखिल किया है। आरोप है कि उन्होंने अवैध सट्टेबाजी से प्राप्त धन को शेयर बाजार में हेरफेर और विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (FPI) के नाम पर भारतीय इक्विटी में चैनलाइज कर धन शोधन (Money Laundering) किया। उनके ₹59.60 करोड़ मूल्य के डिमैट

शेयरों को “अपराध की आय” के रूप में अस्थायी रूप से जब्त किया गया है। निशांत पिट्टी के खिलाफ मुख्य आरोप

- शेयर हेरफेर: ED का आरोप है कि पिट्टी ने अमरदीप शर्मा के साथ पूर्व-नियोजित सौदे में Easy Trip Planners Ltd. के शेयर मूल्य और बाजार पूंजीकरण को कृत्रिम रूप से बढ़ाया।
- विदेशी पोर्टफोलियो निवेश: अवैध सट्टेबाजी से प्राप्त धन को FPI इनफ्लो के रूप में दिखाकर भारतीय इक्विटी बाजार में डाला गया।
- हवाला नेटवर्क से संबंध: पिट्टी दुबई-स्थित हवाला ऑपरेटर हरी

शंकर तिबरेवाल के करीबी सहयोगी बताए गए हैं, जो Skyexchange नामक अवैध बेटिंग प्लेटफॉर्म चलाता था।

- संपत्ति जल्दी: ED ने PMLA के तहत पिट्टी के ₹59.60 करोड़ मूल्य के डिमैट शेयर अस्थायी रूप से जब्त किए।
- धन शोधन की कार्यप्रणाली
- लेयरिंग ऑफ फंड्स: अवैध सट्टेबाजी की रकम शेल कंपनियों और बेनामी खातों के माध्यम से इक्विटी बाजार में लाई गई।
- कृत्रिम मूल्य वृद्धि: EaseMyTrip के शेयरों को कृत्रिम रूप से बढ़ाकर विदेशी संस्थाओं को

बेचा गया, जो तिबरेवाल से जुड़ी थीं।

- इंडीग्रेशन: निवेश के बाद धन वैध पूंजी प्रवाह जैसा दिखने लगा, जिससे सट्टेबाजी की रकम साफ हो गई।
- ऑपरेशनल लिंक: ED ने 2022 में EaseMyTrip द्वारा Skyexchange के साथ क्रिकेट सीरीज को-प्रायोजित करने को सहयोग का प्रमाण बताया।
- महादेव बेटिंग नेटवर्क का पैमाना
- अपराध की आय: 2019 से अब तक लगभग ₹80,000 करोड़।
- मुख्य प्रमोटर: सौरभ चंद्राकर और रवि उप्पल, जिन पर इंटरपोल रेड नोटिस जारी है।

- ED की कार्रवाई: अब तक 14 गिरफ्तारियां और ₹1,885 करोड़ मूल्य की संपत्ति जब्त।
- जोखिम और घोटाले के पहलू
- शेयर बाजार की विश्वसनीयता: शेयर मूल्य में हेरफेर निवेशकों के भरोसे को कमजोर करता है और बाजार को अस्थिर करता है।
- सोमा-पार धन शोधन: दुबई-स्थित हवाला नेटवर्क और FPI का इस्तेमाल अंतरराष्ट्रीय बैंकलों को उजागर करता है।
- कॉर्पोरेट गवर्नेंस का उल्लंघन: एक प्रतिष्ठित ट्रेवल कंपनी का प्रमोटर सट्टेबाजी से जुड़े धन शोधन में शामिल होना गंभीर नैतिक चिंता पैदा करता है।



शुक्रवार 24 सितम्बर 2026



को लगभग राष्ट्रीय के रूप में दर्जा प्राप्त था, क्योंकि वे उनके कुलदेव थे। पेरुवाओं के बाद 1818 से 1892 तक के काल में यह पर्व हिन्दू घरों के दरबार में ही सिमटकर रह गया। ब्रिटिश काल में कोई भी हिन्दू सांस्कृतिक गणेश की पारस्परिक तुलना करते हुए माना है कि गणेशजी में जो विशेषताएँ पाई गई हैं, वे सभी जैनस में भी हैं। रोमन व संस्कृत शब्दों के उच्चारण में भी समानता पाई जाती है। जैसे जैनस और गणेशों में विघ्नहर्ता सार्वभौम ब्रह्मरूप में आवाहन करी गयी है की गणानां त्



वैष्णवपुराण अनुसार भाद्रपद मास

गणेशोत्सव आयोजन के प्रमाण हमें सातवाहन राष्ट्रकूट तथा चालुक्य वंश के काल में मिलते हैं। महान मराठा शासक छत्रपति शिवाजी ने गणेशोत्सव को राष्ट्रीयता एवं संस्कृति से जोड़कर एक नई शुरुआत की। गणेशोत्सव का यह स्वरूप तब से इसी प्रकार कायम रहा और पेशवाओं के समय में भी जारी रहा। पेशवाओं के समय में गणेशजी

पश्चिम में रोमन देवता 'जेनस' को गणपति के समकक्ष माना गया है। ऐसा माना जाता है कि जब भी इटली व रोमन पूजा-अर्चना करते थे, तो वे अपने 'इष्ट जेनस' का नाम लेते थे। 18वीं शताब्दी के संस्कृत के प्रकांड चिद्धान विलियम जोन्स ने जेनस व

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥
अर्थात्  श्विशाल आकार और टेढ़ी
मूंड वाले करोडो सूर्यों के सामानते वाले हे
देव (गणेश जी) , समस्त कार्यों को सदा
विघ्नरहित पूर्ण (सम्पन्न) करे ।
वेदों में भी गणेश जी की महत्ता व उनके

चूक गणेशजी का वाहन चूहा है और एक शरीर स्थूल, तो ऐसे में वे पुरकमा के कैसे कर पाते! इस समस्या को सुलझाना देवर्षि नारद ने । नारद जी ने उन्हें जो सुझाया, उनके अनुसार गणेशजी ने भीम पररन्तप नाम 'राम' नाम लिखकर उसकी सात परकमा और । ब्रह्मजी के पास सबसे पहले पहुंच चुका था। गण । ब्रह्मजी ने उन्हें प्रथमप्रभूय बताया, क्योंकि 'राम' नाम साक्षात् श्रीराम का स्वर्णशब्द है और श्रीराम में ही संपूर्ण ब्रह्मांड निहित है।

इस पर शक्रजी ने क्रोधित होकर अपने शरिर को धुला, तो उनके रोमों से हाथी के शिर वाले, नीले अंजन जैसे रंग आयें, अनेककाल तक शक्रजी को धारण किए हुए इतने विनयकृत्य से उत्पन्न हुए कि पृथ्वी क्षुब्ध हो उठी, देवगण पृथ्वी घबरा गए। तब ब्रह्मा ने महादेव से प्रार्थना की, 'हे त्रिशूलधारिणी! आपके मुख से पैदा हुए वंश में ये विनाशकृत्य आपके इस पुत्र के वंश में नहीं रहें। आप प्रसन्न होकर इस सबको ऐसा ही करा दें।' तब महादेव ने अपने पुत्र से कहा कि

सनातन एवं हिन्दू शास्त्रों में भगवान गणेशजी को, विघ्नहर्ता अर्थात् सभी तरह की परेशानियों को खत्म करने वाला बताया गया है। पुराणों में गणेशजी की भक्ति शनि सहित सारे ग्रहदोष दूर करने वाली भी बताई गई है। हर बुधवार के शुभ दिन गणेशजी की उपासना से व्यक्ति का सुख-सौभाग्य बढ़ता है और सभी तरह की रुकावटें दूर होती हैं।

नीलग्रीवो लम्बोदरो विकटो
विप्रराजकः ॥
धूम्रवर्णो भालचन्द्रो दशमस्तु विनायकः ।
गणपतिर्हस्तिमुखो द्वादशारे यजेद्गणम् ।
इसमें भगवान् गणेश जी के बारह नामों
का स्मरण किया गया है । इन नामों का जप
अगर मंदिर में बैठकर किया जाए तो यह
उत्तम बताया जाता है । जब पूरी पूजा विधि हो

संकर सुवन भवानी नंदन ।
सिद्धि-सदन गज बदन विनायक ।
कृपा-सिंधु सुंदर सब लायक ॥
मोदकप्रिय मुद मंगलदाता ।
विद्या वारिधि बुद्धि विधाता ॥
इसमें भी उनकी मोदकप्रियता प्रदर्शित होती है ।

मोदक प्राप्त करने का अधिकारी मैं हूँ। गणेशजी का तर्कपूर्ण जवाब सुनकर माता पार्वती ने प्रसन्न होकर गणेशजी को मोदक प्रदान कर दिया और कहा कि माता-पिता की भक्ति के कारण गणेश ही यज्ञादि सभी शुभ कार्यों में सर्वत्र अग्रपूज्य होंगे।

श्रीगणेश जी के मौरया नाम का रहस्य

लगे और इस तरह गणपति बप्पा और मोरया का नाम एक होता गया और लोगों में भगवान गणेश का जयकारा लगते हुए गणपति बप्पा मोरया पुकारना शुरू कर दिया।

प्रेम से बोलिए गणेश जी की जय । गणपती
बप्पा मोरया ॥

इसमें भी उनकी मोदकप्रियता प्रदर्शित होती है।

श्रीगणेशजीकेमोरयानामकारहस्य

बप्पामोरया ॥

सेवा सेतु कैम्प के माध्यम से लाभ पात्रों ने उठाया सरकारी सेवाओं का लाभ

सरकारी योजनाओं से हर पात्र परिवार को जोड़ने की पहल, लगा सेवा सेतु कैम्प *राजकीय महिला महाविद्यालय में आयोजित कैम्प में आमजन को योजनाओं की दी जानकारी*

पात्र लोगों को लाभ उठाने के लिए किया प्रेरित*

परिवहन विशेष न्यूज

बहादुरगढ़, 23 सितंबर।

सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं और सरकारी सेवाओं का लाभ पात्र नागरिकों तक सीधे पहुंचाने के उद्देश्य से सेवा संकल्प अभियान के तहत बुधवार को बहादुरगढ़ के राजकीय महिला विद्यालय परिसर में सेवा सेतु कैम्प का

आयोजन किया गया। सेवा सेतु कैम्प में भाजपा नेता दिनेश कौशिक के साथ नगर परिषद की चेयरपर्सन सरोज राठी व रवि बराही सहित एसडीएम अभिनव सिवाच व जिला परिषद सीईओ मनोष फोगाट ने विभागीय स्टॉल का अवलोकन करते हुए पहुंचे लोगों को सरकारी सेवाओं का लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया।

सेवा सेतु कैम्प में विभिन्न विभागों की ओर से स्टॉल लगाकर आमजन को सरकार की योजनाओं, पात्रता और

आवेदन प्रक्रिया की जानकारी दी गई। लोगों ने मौके पर पहुंचकर सरकारी योजनाओं की जानकारी ली और संबंधित विभागों से आवश्यक मार्गदर्शन प्राप्त किया।

सेवा सेतु कैम्प में पहुंचे भाजपा नेता दिनेश कौशिक ने कहा कि सेवा सेतु कैम्प का उद्देश्य सरकारी योजनाओं को कागजों से निकालकर सीधे जरूरतमंद लोगों तक पहुंचाना है। उन्होंने कहा कि ऐसे शिविरों के माध्यम से नागरिकों को एक ही स्थान पर

विभिन्न विभागों की सेवाएं और योजनाओं की जानकारी मिल रही है, जिससे उन्हें सरकारी कार्यालयों के अनावश्यक चक्कर लगाने से राहत मिलती है। उन्होंने कहा कि सेवा संकल्प अभियान के माध्यम से जनसेवा को प्राथमिकता देते हुए हर पात्र नागरिक को सरकारी योजनाओं से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है।

नगर परिषद चेयरपर्सन सरोज राठी ने कहा कि सरकार का संकल्प है कि जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ

समाज के अंतिम पायदान पर खड़े पात्र व्यक्ति तक पहुंचे। उन्होंने कहा कि जानकारी के अभाव में कोई भी पात्र नागरिक योजना के लाभ से वंचित न रहे, इसी उद्देश्य से सेवा सेतु कैम्प जैसे कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। उन्होंने आमजन से आह्वान किया कि वे कैम्प में पहुंचकर सरकारी योजनाओं की जानकारी लें और पात्रता के अनुसार उनका लाभ उठाएं।

भाजपा नेता रवि बराही ने कहा कि सेवा संकल्प अभियान सरकार और आमजन के

बीच संपर्क को और मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल है। उन्होंने कहा कि सरकार की योजनाओं का वास्तविक लाभ तभी सुनिश्चित होगा, जब पात्र लोगों को योजनाओं की जानकारी के साथ उनका लाभ लेने की प्रक्रिया भी सरलता से उपलब्ध हो।

सेवा सेतु कैम्प में एसडीएम अभिनव सिवाच ने कहा कि जिला प्रशासन आमजन को सरकारी योजनाओं का लाभ प्राथमिकता के आधार पर प्रदान करने के लिए

कृत संकल्प है। इसी सकारात्मक सोच के क्रियान्वयन में जिला भर में शहरी व ग्रामीण क्षेत्र में सेवा संकल्प अभियान के तहत सेवा सेतु कैम्प लगाए जा रहे हैं।

इस अवसर पर मार्केट कमेटी के वाइस चेयरमैन प्रदीप गुप्ता बबनू, पालेराम शर्मा, दिनेश शेखावत, सोनू मान, सुदेश रंगा और नगर परिषद से ईओ संजय रोहिल्ला, जेई आशीष, आकाश और विभिन्न विभागों के अधिकारी व कर्मचारी सहित क्षेत्र के लाभार्थी मौजूद रहे।

शहीदों का त्याग और बलिदान सदैव देशवासियों को राष्ट्रसेवा के लिए करता रहेगा प्रेरित : डीसी

शहीदों का त्याग और बलिदान सदैव देशवासियों को राष्ट्रसेवा के लिए करता रहेगा प्रेरित : डीसी

परिवहन विशेष न्यूज

हरियाणा वीर एवं शहीदी दिवस पर डीसी वर्षा खंगवाल ने शहीद स्मारक पर पुष्प अर्पित कर दी श्रद्धांजलि

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 23 सितंबर

हरियाणा वीर एवं शहीदी दिवस के अवसर पर डीसी वर्षा खंगवाल ने बुधवार को शहीद स्मारक पर पुष्प चक्र अर्पित कर देश की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान देने वाले वीर शहीदों को श्रद्धांजलि दी। उन्होंने महान स्वतंत्रता सेनानियों व शहीदों के बलिदान को नमन करते हुए कहा कि देश की एकता, अखंडता और सुरक्षा के लिए वीर जवानों द्वारा दिया गया सर्वोच्च बलिदान सदैव स्मरणीय रहेगा।

डीसी वर्षा खंगवाल ने कहा कि शहीदों की वीरता, त्याग और देशभक्ति हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत है। वीर शहीदों ने राष्ट्र की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दी, जिसके कारण आज हम सुरक्षित और स्वतंत्र वातावरण में जीवन जी रहे हैं। उन्होंने कहा कि शहीदों के बलिदान को केवल स्मरण करना ही नहीं, बल्कि उनके आदर्शों को अपने जीवन में अपनाना भी हमारी जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि युवा पीढ़ी को देश के वीर सपूतों के जीवन, संघर्ष और बलिदान से परिचित करवाना जरूरी है, ताकि उनमें राष्ट्रप्रेम, अनुशासन और देशसेवा की भावना और मजबूत हो।

हरियाणा वीर एवं शहीदी दिवस पर जिला प्रशासन के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भी शहीद स्मारक पर पुष्प अर्पित कर वीर शहीदों को नमन किया और राष्ट्रहित में समर्पित भाव से कार्य करने का संकल्प लिया।

इस अवसर पर सैनिक व अर्धसैनिक कल्याण विभाग के वेलफेयर ऑफिसर कर्नल राजीव कुंडू, वेलफेयर ऑर्गनाइजर विजेन्द्र सिंह व डीआईपीआरओ दिनेश कुमार सहित अन्य पूर्व सैनिकों ने वीर शहीदों की शहादत को सलाम किया।

पात्र नागरिक का नाम मतदाता सूची में शामिल करना ही प्रशासन की प्राथमिकता : डीसी

30 सितंबर तक दावे-आपत्तियां दर्ज कराएं, पात्र युवा तुरंत भरें फॉर्म-6

डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी वर्षा खंगवाल ने जिला झज्जर के नागरिकों से की अपील

झज्जर, 23 सितंबर

भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार जिला झज्जर के सभी चारों विधानसभा क्षेत्रों में एसआईआर-2026 के तहत मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण का कार्य जारी है। डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी वर्षा खंगवाल ने कहा कि अभियान का उद्देश्य प्रत्येक पात्र नागरिक का नाम मतदाता सूची में शामिल करना तथा अपात्र नामों को हटाकर सूची को

शुद्ध एवं अद्यतन बनाना है। उन्होंने पात्र नागरिकों से अपील की कि वे अपनी और परिवार के पात्र सदस्यों की जानकारी मतदाता सूची में अवश्य जांचें। जिन पात्र नागरिकों का नाम सूची में नहीं है, वे आवश्यक दस्तावेजों के साथ फॉर्म-6 भरकर नाम दर्ज करवाएं। पात्र युवाओं से उन्होंने विशेष रूप से कहा कि वे मतदाता बनने के लिए तुरंत आवेदन करें और अंतिम तिथि का इंतजार न करें।

आगामी 30 सितंबर तक दर्ज कराएं दावे-आपत्तियां

डीसी ने बताया कि एसआईआर-2026 के संशोधित कार्यक्रम के अनुसार दावे एवं आपत्तियां 30 सितंबर तक दर्ज कराई जा सकती हैं। इनका निपटारा 28 अक्टूबर तक होगा तथा अंतिम मतदाता सूची 6 नवंबर को प्रकाशित की जाएगी। मतदाता नाम, पता, आयु, फोटो सहित अन्य विवरणों की जांच कर त्रुटि मिलने पर समय रहते सुधार के लिए आवेदन करें।

पात्र मतदाता फॉर्म-7 व 8 से भी कर सकते हैं आवेदन

जन समस्याओं के समाधान के लिए झज्जर में जिला स्तरीय समाधान शिविर आज

उपमंडल स्तर पर बेरी, बहादुरगढ़ और बादली लघु सचिवालयों में सुबह 10 से 12 बजे तक आयोजित होंगे शिविर

झज्जर, 23 सितंबर

आमजन की समस्याओं के त्वरित, पारदर्शी एवं प्रभावी समाधान के उद्देश्य से जिला प्रशासन द्वारा

गुरुवार 24 सितंबर को जिला मुख्यालय सहित सभी उपमंडलों में समाधान शिविर आयोजित किए जाएंगे। ये शिविर सुबह 10 बजे से दोपहर 12 बजे तक लगाए जाएंगे, जहां नागरिकों की शिकायतें सुनकर उनका मौके पर ही निपटारा सुनिश्चित किया जाएगा।

जिला स्तरीय समाधान शिविर का

आयोजन लघु सचिवालय स्थित कॉन्फ्रेंस हॉल में डीसी वर्षा खंगवाल की अध्यक्षता में लगेगा। इस दौरान डीसी विभिन्न विभागों से संबंधित शिकायतें सुनते हुए अधिकारियों को समस्याओं के समयबद्ध समाधान के निर्देश देंगी।

तीनों सब डिवीजन में भी लगेगे समाधान शिविर

आयुष चिकित्सा शिविरों के माध्यम से आमजन को दिया स्वस्थ जीवनशैली का संदेश

सेवा मेरा योगदान थीम के साथ राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस पर झज्जर में निःशुल्क आयुष चिकित्सा शिविर आयोजित

आयुर्वेद व होम्योपैथी चिकित्सा के साथ योग और औषधीय पौधों के प्रति किया जागरूक

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 23 सितंबर

सेवा मेरा योगदान थीम के साथ राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस (11वें) के अवसर पर आयुष विभाग, झज्जर की ओर से निःशुल्क आयुष चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का शुभारंभ नगर परिषद झज्जर के चेयरमैन जिले सिंह सैनी ने किया। श्री सैनी ने डॉ. सुरेंद्र राठी के साथ धन्यवती पूजन एवं दीप प्रज्वलन के साथ शिविर का

शुभारंभ किया। इस अवसर पर जिला आयुर्वेदिक अधिकारी डॉ. सुमन खरब सहित आयुष विभाग के चिकित्सक एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

317 आयुर्वेदिक व 110 होम्योपैथिक मरीजों की हुई जांच

शिविर में आयुर्वेदिक एवं होम्योपैथिक चिकित्सकों द्वारा मरीजों की जांच कर उन्हें आवश्यक चिकित्सकीय परामर्श दिया गया तथा निःशुल्क औषधियों का वितरण किया गया। शिविर में आयुर्वेद के 317 तथा होम्योपैथी के 110 मरीजों की जांच की गई। आयुर्वेदिक चिकित्सक डॉ. मनोज तथा होम्योपैथिक फार्मासिस्ट दीपक ने अपनी सेवाएं प्रदान कीं।

*योगाभ्यास के जरिए

वहीं आयुर्वेदिक फार्मासिस्ट बिजेन्द्र एवं नरेंद्र ने शिविर के सफल आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सेवा सेतु अभियान के तहत बहादुरगढ़ में भी लगा निःशुल्क शिविर

सेवा सेतु अभियान के तहत राजकीय महिला महाविद्यालय, बहादुरगढ़ में भी निःशुल्क आयुष चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया। शिविर में 95 मरीजों ने चिकित्सा सेवाओं का लाभ उठाया। इस दौरान होम्योपैथिक चिकित्सा एवं निःशुल्क होम्योपैथिक औषधियों का वितरण किया गया। होम्योपैथिक चिकित्सक डॉ. मनोज तथा होम्योपैथिक फार्मासिस्ट दीपक ने अपनी सेवाएं प्रदान कीं।

*योगाभ्यास के जरिए

तथा प्राकृतिक चिकित्सा पद्धतियों को दैनिक जीवन में अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

सामाजिक संस्थाओं ने आयोजन में दिया सहयोग

शिविर के आयोजन में सर्वोदय जनहित समाज कल्याण के अध्यक्ष प्रदीप कुमार का विशेष योगदान रहा। इसके अतिरिक्त दुर्गा मंदिर समिति के सदस्यों ने भी कार्यक्रम सहयोग प्रदान किया। आयुष विभाग की ओर से आयोजित इन शिविरों के माध्यम से आमजन को आयुर्वेद, होम्योपैथी, योग एवं औषधीय पौधों के महत्व की जानकारी दी जा रही है।

सेवा मेरा योगदान के तहत जिलाभर में चला स्वच्छता अभियान

ग्रामीण, शहरी क्षेत्रों और शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थियों व नागरिकों ने किया श्रमदान, स्वच्छता का दिया संदेश

आईटीआई खुड्डन सहित विभिन्न शिक्षण संस्थानों में आयोजित हुई स्वच्छता गतिविधियां

झज्जर, 23 सितंबर

जिला झज्जर में 17 अक्टूबर तक चल रहे सेवा संकल्प अभियान के तहत 'सेवा मेरा योगदान' मॉड्यूल के अंतर्गत बुधवार को ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के साथ-साथ शिक्षण संस्थानों में स्वच्छता अभियान चलाया गया।

डीसी वर्षा खंगवाल के मार्गदर्शन में आयोजित स्वच्छता जागरूकता अभियान में ग्रामीणों, विद्यार्थियों, शिक्षकों व कर्मचारियों ने बड़-चड़कर भाग लेते हुए श्रमदान किया और स्वच्छता का संदेश दिया।

आईटीआई में विद्यार्थियों ने दिया स्वच्छता का संदेश

आईटीआई खुड्डन के साथ-साथ झज्जर आईटीआई महिला विंग सहित जिलाभर के शिक्षण संस्थानों में भी स्वच्छता गतिविधियां आयोजित की गईं, जिसमें विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। विद्यार्थियों ने परिसर की साफ-सफाई कर कचरा एकत्र किया और स्वच्छ वातावरण बनाए रखने का संदेश दिया। इस दौरान विद्यार्थियों को स्वच्छता को दैनिक जीवन का

हिस्सा बनाने तथा अन्य लोगों को भी इसके लिए प्रेरित करने का आह्वान किया गया। विद्यार्थियों को स्वच्छता के महत्व के बारे में जागरूक करते हुए अपने घर, शिक्षण संस्थान और आसपास के क्षेत्रों को स्वच्छ रखने तथा कचरा निर्धारित स्थान पर डालने के लिए प्रेरित किया गया।

ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में हुई स्वच्छता गतिविधियां

बुधवार को शहरी क्षेत्रों में डीएमसी जगजिन्स के निर्देशानुसार झज्जर, बहादुरगढ़ और बेरी के विभिन्न स्थानों पर स्वच्छता गतिविधियां आयोजित की गईं। सफाई टीम ने निर्धारित स्थानों एवं कचरा संचेदनशील क्षेत्रों की साफ-सफाई कर कचरे का उठान किया। लोगों को स्वच्छता टीम द्वारा डोर टू डोर जाकर स्वच्छता अपनाने व प्लास्टिक का उपयोग न करने के लिए प्रेरित किया गया। वहीं, ग्रामीण क्षेत्रों में सीईओ जिला परिषद मनोष

फोगाट व डीडीपीओ निशा तंवर के मार्गदर्शन में विभिन्न गांवों में स्वच्छता अभियान चलाया गया। ग्रामीणों ने सार्वजनिक स्थानों, गलियों और आसपास के क्षेत्रों की साफ-सफाई में सहयोग करते हुए स्वच्छता के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाई।

सेवा और जनभागीदारी की भावना को मिल रहा बढ़ावा

डीसी वर्षा खंगवाल ने कहा कि 'सेवा मेरा योगदान' मॉड्यूल के तहत आयोजित स्वच्छता व अन्य जागरूकता गतिविधियों का उद्देश्य नागरिकों और विद्यार्थियों में स्वच्छता, सेवा एवं सामाजिक जिम्मेदारी की भावना को मजबूत करना है। सेवा संकल्प अभियान के माध्यम से विभिन्न गतिविधियों में जनभागीदारी सुनिश्चित करते हुए लोगों को समाज और पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है।

माँ को कुर्सी दे दो...! - राजनीति से ऊपर मानवीय संवेदना का स्वर

जब मंच पर सवाल सरकारों से हो तो जवाब भी सरकारों से ही माँगा जाए, किसी बुजुर्ग माँ की थकी हुई उम्र पर हँसी के तीर नहीं चलने चाहिए – कवि संजय एम. तराणेकर की मार्मिक रचना

रचनाकार - संजय एम. तराणेकर, कवि
प्रस्तुतकर्ता पिकी कुंडू सामाजिक परामर्शदाता परिवहन विशेष समाचार पत्र

कुर्सी सत्ता नहीं, सम्मान है
आज की राजनीति में आरोप-प्रत्यारोप का दौर है। मंच वह, मिमिक्री है, हँसी-मजाक है। पर इसी बीच एक सवाल मानवीय संवेदना का भी उठता है- जब मंच पर एक बुजुर्ग माँ खड़ी हो, थकी हुई उम्र के साथ, तो क्या उसे कुर्सी तक का सम्मान नहीं मिलना चाहिए? इसी भाव को कवि संजय एम. तराणेकर ने अपनी रचना में पिरोया है।

मूल कविता



> माँ को कुर्सी दे दो, इतना तो 'सम्मान' रहे,
> उम्र की ढलती शाम, चेहरे पर मुस्कान रहे।
> राजनीति अपने स्थान, मतभेदों में बात रहे,
> माँ के सम्मान से ऊपर कैसी 'सौगात' रहे ?
> मंच पे सवाल उठें, सरकारों से जवाब माँगे,
> किसी बुजुर्ग माँ पर हँसी के तीर नहीं भाँगे।
> कहें वह मिमिक्री, हँसी-मजाक का मंच था,
> सवाल ये रहता असम्मान का वह क्षण था ?
> कुर्सी कोई सत्ता नहीं, न कोई सिंहासन माँगे,
> हाँ, थकी हुई उम्र के आगे थोड़ा आसन माँगे।
> नेता आएँ, नेता जाएँ, राजनीति के रंग बदलें,
> माँ के आँचल की गरिमा पे शब्द कैसे मचलें ?

> क्योंकि संसद की ऊँची बातें बाद में कह दो,
> माँ की झुकी उम्र पर ध्यान देकर मान दे दो।
> भाई, माँ को कुर्सी दे दो, माँ को सम्मान दे दो,

> राजनीति जितनी हो मानवता को स्थान दे दो।
मुख्य बिन्दु – इस कविता में क्या है ?
1. तथ्य - सम्मान बनाम सत्ता: कवि कहता है - 'कुर्सी कोई सत्ता नहीं, न कोई

सिंहासन माँगे, हाँ, थकी हुई उम्र के आगे थोड़ा आसन माँगे।' अर्थात् बुजुर्गों के लिए कुर्सी सुविधा नहीं, गरिमा का प्रतीक है।
2. तथ्य - राजनीति की मर्यादा: र्‍राजनीति अपने स्थान, मतभेदों में बात रहेर - मतभेद विचारों में हो, व्यक्ति के, विशेषकर मातृ-तुल्य बुजुर्ग के सम्मान पर प्रहार न हो।
3. तथ्य - मानवीय संदेश: अंतिम पंक्ति इस रचना का सार है - र्‍राजनीति जितनी हो मानवता को स्थान दे दो। र्‍राहें किसी भी दल की सरकार से सवाल हो, सवाल नीतियों पर हो, न कि किसी माँ की उम्र या थकान पर।
संपादकीय टिप्पणी: यह कविता किसी एक घटना की प्रतिक्रिया नहीं, बल्कि एक सार्वभौमिक मूल्य की याद है। भारतीय संस्कृति में रमातृ देवो भवत् सर्वसे पहले है। मंच कोई भी हो, मिमिक्री या व्यंग्य का लक्ष्य सत्ता होनी चाहिए, ममता नहीं। यह रचना हर पाठक को सोचने पर मजबूर करती है कि हम राजनीति में इतने कठोर हो गए हैं कि एक माँ को कुर्सी तक देने में भी राजनीति देख लेते हैं ?



सीएनजी स्कूल बसों को बंद करना अव्यावहारिक, अभिभावकों पर बड़ेगा बोझ: संजय सम्राट

दिल्ली टैक्सी एंड ट्रिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन ने मंत्री कपिल मिश्रा से की मुलाकात, झाप्ट EV नीति 2026 में अनिवार्य विद्युतीकरण पर जताई आपत्ति
रिपोर्ट विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

दिल्ली में स्कूल बसों के अनिवार्य विद्युतीकरण के प्रस्तावों को लेकर परिवहन व्यवसायियों में रोष बढ़ता जा रहा है। दिल्ली टैक्सी एंड ट्रिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन के एक प्रतिनिधिमंडल ने आज दिल्ली सरकार के कानून एवं पर्यटन मंत्री कपिल मिश्रा से मुलाकात कर झाप्ट दिल्ली ईवी नीति 2026 पर गंभीर आपत्ति दर्ज कराई। एसोसिएशन ने सीएनजी स्कूल बसों को पूर्ववत् संचालित रखने की मांग की है।

एसोसिएशन के अध्यक्ष ने कहा कि सीएनजी स्कूल बसों को बंद करने का फैसला व्यावहारिक नहीं है। इसका सीधा आर्थिक बोझ बच्चों और अभिभावकों पर पड़ेगा।

मुख्य तथ्य और तर्क:
1. कीमत में तीन गुना अंतर: वर्तमान में एक सीएनजी स्कूल बस की कीमत 30 से 40 लाख रुपये है, जबकि एक इलेक्ट्रिक स्कूल बस की कीमत 1 करोड़ से 1.25 करोड़ रुपये तक है। यह



अंतर छोटे ट्रांसपोर्टरों के लिए असहनीय है।
2. अभिभावकों पर सीधा असर: यदि महंगी इलेक्ट्रिक बसें अनिवार्य की गईं तो स्कूल ट्रांसपोर्ट फीस में भारी वृद्धि होगी। इसका सबसे ज्यादा असर निम्न, मध्यम और EWS वर्ग के परिवारों पर पड़ेगा।
3. उपयोग बनाम लागत: अधिकांश स्कूल बसें दिन में मात्र 50-60 किलोमीटर ही चलती हैं और साल में कई महीने छुट्टियों के कारण खड़ी रहती हैं। ऐसे में इतना बड़ा निवेश व्यावहारिक नहीं है।
4. इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी: प्रतिनिधिमंडल ने बताया कि इलेक्ट्रिक बसों के लिए चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर, बैटरी की सीमित लाइफ, महंगा रखरखाव, तकनीकी सपोर्ट और रीसेल वैक्यूमों को

लेकर गंभीर चिंताएं हैं। जबकि सीएनजी बसों की सर्विस व्यवस्था पूरी तरह स्थापित है।
5. 2001 से सफल मॉडल: दिल्ली में 2001 से सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर सीएनजी आधारित सार्वजनिक परिवहन सफलतापूर्वक चल रहा है, जो सुरक्षित, किफायती और स्वच्छ ईंधन का प्रमाणित विकल्प है।
बैठक के दौरान पैनिक बटन, स्पीड लिमिट डिवाइस, VLTID, बीएस-4 डीजल वाहनों पर प्रतिबंध और वाहन आयु सीमा जैसे अन्य मुद्दे भी उठाए गए।
मंत्री कपिल मिश्रा ने प्रतिनिधिमंडल को आश्वासन दिया कि वे इन विषयों को मुख्यमंत्री और संबंधित विभागों के समक्ष रखेंगे तथा परिवहन संगठनों के साथ अधिकारियों की बैठक कराएंगे।

एसोसिएशन की प्रमुख मांगें:
- सीएनजी स्कूल बसों को पूर्ववत् संचालित करने की अनुमति जारी रखी जाए।
- अनिवार्य विद्युतीकरण के प्रस्ताव पर पुनर्विचार हो।
- नई नीति से पहले ट्रांसपोर्टरों, स्कूल संचालकों, अभिभावकों और विशेषज्ञों से व्यापक परामर्श किया जाए।
- तकनीक-तटस्थ (Technology Neutral) नीति अपनाई जाए।
- बच्चों की सुरक्षा और लाखों लोगों की आजीविका को ध्यान में रखकर संतुलित निर्णय लिया जाए।
- बैठक में एसोसिएशन की ओर से सरदार जेल सिंह, सरदार मंजीत सिंह और विशाल जैन भी उपस्थित रहे।

रामधारी सिंह 'दिनकर' जयंती मनाई गई

रिपोर्ट दीपक कुमार घोष परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक खुंदी

विश्व बांग्ला हिंदी संगम परिषद के बैनर तले शहीद भगत सिंह चौक पर हिंदी साहित्य के सूर्य, राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की आज 118वीं जयंती मनाई गई। विश्व बांग्ला हिंदी संगम परिषद के अध्यक्ष डॉ दीपक कुमार घोष ने कहा कि राष्ट्रकवि का जन्म 23 सितंबर 1908 को बिहार के बेगूसराय जिले के सिमरिया घाट गांव में एक साधारण किसान परिवार में हुआ था। बचपन में पिता का साया उठने के



बाद अभावों में पले-बढ़े दिनकर ने अपनी लेखनी में ओज, विद्रोह और

राष्ट्रीय चेतना को ऐसा स्वर दिया जिसने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान युवाओं में क्रांति की अलख जगा दी। मुरहू के कवि डॉ धर्मेन्द्र नाथ तिवारी ने कहा कि
दिनकरजी केवल कवि नहीं, शब्दों के योद्धा थे। उनकी पंक्तियाँ - 'हित-वचन नहीं तुने माना, मैत्री का मूल्य न पहचाना, तो ले, मैं भी अब जाता हूँ, अंतिम संकल्प सुनाता हूँ। याचना नहीं, अब रण होगा।' और 'सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।' आज भी जन-जन की बुबान पर है। अखिल भारतीय सांस्कृतिक विकास महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष

तपन घोष ने कहा कि
दिनकर जी की कालजयी रचनाएं 'रश्मिबंधी', 'परशुराम की प्रतीक्षा', 'कुरुक्षेत्र' और 'उर्वशी' हिंदी साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं। 'उर्वशी' के लिए उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार और 'संस्कृति के चा अध्याय' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। युवा धुवेंद्र भास्कर ने कहा कि रामधारी सिंह दिनकर जयंती का उद्देश्य सिर्फ एक कवि को याद करना नहीं, बल्कि उनकी राष्ट्रीय चेतना और सामाजिक न्याय की विरासत को नई पीढ़ी तक पहुंचाना है।

मिर्जा गालिब कॉलेज फाइनल में पहुंचे अंतर महाविद्यालय पुरुष फुटबॉल टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में रोमांचक मुकाबले, 27 सितंबर को होगा फाइनल

रिपोर्ट विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक गयाजी

मगध विश्वविद्यालय, बोधगया अंतर महाविद्यालय पुरुष फुटबॉल टूर्नामेंट 2026 के तीसरे दिन गांधी मैदान स्थित हरिहर सुब्रमण्यम स्टेडियम में सेमीफाइनल मुकाबले खेले गए। पहले सेमीफाइनल में एस. सिन्हा कॉलेज, औरंगाबाद और गया कॉलेज, गया के बीच मुकाबला हुआ, जिसमें गया कॉलेज की टीम ने जीत दर्ज कर फाइनल में प्रवेश किया। दूसरे सेमीफाइनल में आर.एल.एस.वाई. कॉलेज, औरंगाबाद और मिर्जा गालिब कॉलेज, गया की टीमें आमने-सामने हुईं। इसमें मिर्जा गालिब कॉलेज, गया की टीम विजयी रही और फाइनल में अपनी जगह पक्की की। टूर्नामेंट का फाइनल मुकाबला 27



सितंबर 2026 (रविवार) को हरिहर सुब्रमण्यम स्टेडियम, गांधी मैदान में खेला जाएगा। ज्ञात हो कि प्रतियोगिता का आयोजन 21 से 24 सितंबर 2026 तक निर्धारित है। सेमीफाइनल मुकाबले का शुभारंभ मिर्जा गालिब कॉलेज के सचिव

शकील अहमद खान ने गेंद पर किक मारकर किया। इस अवसर पर कॉलेज के प्राचार्य डॉ. मो. अली हुसैन, चेयरमैन कार्डसल अरशाफ अली, डॉ. मो. शहाबुद्दीन, डॉ. जोफैल हसन, डॉ. मो. सफदर अली, सैयद नियाजुद्दीन, मो. शमीम, खतीब

अहमद, शब्बीर आलम, डॉ. प्रियंका एवं सुश्री लुब्ना अब्बरीन सहित कई खिलाड़ी, बड़ी संख्या में फुटबॉल प्रेमी और छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे। यह जानकारी कॉलेज के मीडिया प्रभारी डॉ. इब्रार खान एवं डॉ. अकरम वारिस ने दी।

एटा, यू.पी.में ‘युवा फॉर विकसित उत्तर प्रदेश’ कार्यक्रम आयोजित

जेएनयू की प्रो. पूनम कुमारी के संयोजन में योगी जी के नेतृत्व में 'जेन जी' ने जताई आस्था।
रिपोर्ट विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक एटा,उत्तर प्रदेश

योगी पथः बेमिसाल संवाद श्रृंखला-2 के अंतर्गत 'युवा फॉर विकसित उत्तर प्रदेश' कार्यक्रम एटा, यू.पी. में आयोजित किया गया। जेएनयू, नई दिल्ली की प्रो. पूनम कुमारी के संयोजन और अध्यक्षता में आयोजित इस संवाद का उद्देश्य प्रदेश के युवाओं को यू.पी. की विकास यात्रा से जोड़ने के साथ उनकी आकांक्षाओं, अनुभवों और सुझावों को व्यापक मंच प्रदान करना रहा। इसमें पूरे प्रदेश के युवाओं की भागीदारी रही।

प्रो. पूनम कुमारी ने युवाओं के साथ उत्तर प्रदेश के विकास, शिक्षा, रोजगार, कौशल विकास, महिला सशक्तीकरण, उद्यमिता और तकनीकी प्रगति जैसे विषयों पर विचार साझा किए। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में युवा केवल प्रदेश का भविष्य नहीं, बल्कि वर्तमान की विकास यात्रा के महत्वपूर्ण सहभागी भी हैं। उन्होंने युवाओं से शिक्षा और ज्ञान के साथ सामाजिक जिम्मेदारियों को समझने का आह्वान किया, और साथ ही विकसित उत्तर प्रदेश' के

लिए योगी का हाथ मजबूत करने का संकल्प दिलाया। उन्होंने एमएमएसएमई, एक जिला एक उत्पाद (ओडीओपी), महिला सुरक्षा के क्षेत्र में हुए अनुभवों और युवा रोजगार जैसे विषयों पर भी चर्चा की।
एटा के समाजसेवी मानवेंद्र मनु ने कहा कि उत्तर प्रदेश की विकास यात्रा में युवाओं की ऊर्जा, प्रतिभा और नवाचार की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने युवाओं से अपनी क्षमताओं का सकारात्मक उपयोग करते हुए विकसित उत्तर प्रदेश के निर्माण में योगदान देने की अपील की।

कार्यक्रम में युवा और 'जेन जी' वक्ता डॉ. शिवानी सक्सेना, धीरज सिंह, शैलेंद्र कुमार, आलोक कुमार, अजय पमार, यत्येन्द्र सिंह, मनमोहन सिंह, धीरेंद्र सिंह और तरुण सिंह ने भी विभिन्न विषयों पर अपने विचार रखे। धीरज सिंह ने बताया कि प्रदेश में सपा और बसपा सरकार को मिलकर 15 साल में 4 लाख सरकारी नौकरियां दी गईं, जबकि वर्तमान सरकार के कार्यकाल में 8 लाख से अधिक यानी दुगुनी सरकारी भतियां हुई हैं। महिला सशक्तीकरण के संबंध में अपने सर्वेक्षण अनुभव साझा करते हुए उन्होंने युवा महिलाओं में बढ़ते आत्मविश्वास की चर्चा की। आलोक कुमार ने आंकड़ों के माध्यम से प्रदेश में विकास की



दिशा पर प्रकाश डालते हुए शिक्षा के क्षेत्र में स्मार्ट क्लास, आईसीटी लेब, डिजिटल शिक्षण सामग्री और टैबलेट जैसी पहलों का उल्लेख किया। मनमोहन सिंह ने सुशासन और 'जिरो टॉलरेंस' की नीति का उल्लेख करते हुए सरकार की कार्यप्रणाली की सराहना की।
कार्यक्रम के दौरान युवा वक्ताओं ने डिजिटल तकनीक, स्टार्टअप, स्वरोजगार, कौशल विकास और नवाचार को युवाओं के लिए नए अवसरों का माध्यम बताया। संवाद के दौरान युवाओं

में प्रदेश के विकास को लेकर उत्साह और सकारात्मक ऊर्जा देखने को मिली। प्रतिभागियों ने योगी के नेतृत्व में विकसित उत्तर प्रदेश के लक्ष्य में अपनी भूमिका निभाने का संकल्प लिया। शकार्यक्रम का संचालन डॉ.शिवानी सक्सेना ने किया। कार्यक्रम के दौरान युवाओं की भागीदारी के साथ रक्तदान शिविर का भी आयोजन किया गया। जिसमें बड़ी संख्या में युवाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए रक्तदान किया। यह आयोजन सफल और सार्थक रहा।

“त्याग करना या करवाना नहीं, त्याग की भावना बनाना और प्रभावना बढ़ाना ही उत्तम त्याग धर्म”

– गुरुवार को जैन मंदिरों में होगी दशलक्षण पर्व के नवें दिवस “उत्तम आर्किचन धर्म” की आराधना

रिपोर्ट विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक जयपुर

दशलक्षण महापर्व के आठवें दिन बुधवार को दुनियाभर के दिगंबर जैन मंदिरों में “उत्तम त्याग धर्म” की आराधना की गई। जैन मंदिरों में श्रीजी के जयकारों के साथ श्रद्धालुओं ने त्याग, दान और परोपकार की भावना को जीवन में अपनाने का संकल्प लिया। बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने पूजन में शामिल होकर “उत्तम त्याग धर्म” की प्रभावना की। मानसरोवर के न्यू सांगानेर रोड स्थित ईजीनियर्स कॉलोनी के दिगंबर जैन मंदिर में दशलक्षण पर्व के आठवें दिन “उत्तम त्याग धर्म” की मंगल शुरुआत प्रातः 6 बजे श्रीजी के स्वर्ण एवं रजत कलशों से कलशाभिषेक एवं शान्तिधारा के साथ हुई। इसके पश्चात श्रावक-श्राविकाओं ने निर्यम नियम पूजन के साथ “उत्तम त्याग धर्मविधान” की पूजा-अर्चना की। अष्ट द्रव्यों के साथ अर्घ्य समर्पित कर श्रद्धालुओं ने कर्मों की निर्जरा एवं त्याग की भावना के साथ जिनेंद्र प्रभु की आराधना की। अखिल भारतीय दिगंबर जैन युवा एकता संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष अभिषेक जैन बिट्टू ने शास्त्रों के अनुसार उत्तम त्याग धर्म का महत्व बताते हुए कहा कि— “चिड़िया



चोंच भर ले गई, नदी न घट्यो नीर। देत-देता धन ना घटे, कह गए दास कबीर।” उन्होंने बताया कि दान चार प्रकार के माने गए हैं औषधदान, शास्त्रदान, अभयदान और आहारदान उत्तम त्याग धर्म दान की महिमा का संदेश देता है। “अनुग्रहाय स्वस्व्यातिसर्गो दानम्” अर्थात् स्वयं एवं दूसरों के अनुग्रह के लिए अपने धन आदि का त्याग करना दान कहलाता है। उन्होंने कहा कि गृहस्थ जीवन में दान और पूजा का विशेष महत्व है। धन केवल अपने पास रखने से सार्थक नहीं होता, बल्कि उसका सदुपयोग करने से उसका महत्व बढ़ता है। धन की तीन गतियां बताई गई हैं—दान, भोग और नाश। यदि धन का उचित उपयोग नहीं किया जाए तो अंततः उसकी

गति नाश की ओर होती है। अभिषेक जैन बिट्टू ने कहा कि समुद्र का जल खारा और नदियों का जल मीठा होता है, क्योंकि समुद्र जल को संचित करता है, जबकि नदियां अपना जल निरंतर प्रवाहित करती हैं। इसी प्रकार जो धन का सदुपयोग करता है, उसका धन सार्थक होता है, जबकि केवल संग्रह करने की प्रवृत्ति अंततः धन को निष्फल बना देती है। “जोड़ कर रख लो चाहे लाख हीरे-मोती, मगर याद रखना, कफन में जेब नहीं होती।” उन्होंने कहा कि जरूरतमंदों की सहायता, धार्मिक कार्यों में सहयोग, आहारदान, औषधदान, शास्त्रदान और अभयदान के माध्यम से समाज एवं मानवता के प्रति अपने दायित्वों का निर्वहन किया जा सकता है। त्याग केवल

वस्तु छोड़ने का नाम नहीं, बल्कि त्याग की भावना को जीवन में उतारना और उसकी प्रभावना बढ़ाना ही उत्तम त्याग धर्म का सार है। अभिषेक जैन बिट्टू ने बताया कि बुधवार से तीन दिवसीय “झर का तले” निर्जल उपवास भी प्रारंभ हो गए हैं। बड़ी संख्या में तपस्वी निर्जल उपवास रखकर दशलक्षण महापर्व की आराधना एवं प्रभावना में सहभागी बन रहे हैं। सभी त्यागी-वृत्तियों का सामूहिक पारणा 26 सितंबर को कराया जाएगा। गुरुवार को दशलक्षण महापर्व के नवें दिन “उत्तम आर्किचन धर्म” मनाया जाएगा। इस अवसर पर जैन मंदिरों में विशेष पूजन एवं धार्मिक आराधना के साथ श्रद्धालु आर्किचन्य धर्म के संदेश को आत्मसात करेंगे।

रंगों में पंजाब: सिंधु घाटी से आधुनिकता तक

लेखक डॉ. विजय गर्ग, परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

काला मानव सभ्यता की सबसे प्राचीन और प्रभावशाली अभिव्यक्तियों में से एक है। लिखित इतिहास के विकसित होने से बहुत पहले ही मनुष्य ने रेखाओं, आकृतियों, प्रतीकों और रंगों के माध्यम से अपने विचारों, भावनाओं, विश्वासों तथा आसपास की दुनिया को व्यक्त करना शुरू कर दिया था। पंजाब की चित्रकला का इतिहास भी केवल चित्र बनाने की कहानी नहीं है, बल्कि बदलते समाज, धार्मिक परंपराओं, राजसी संस्कृति, लोकजीवन, प्रकृति, विरासत, विभाजन, प्रवास और आधुनिक विचारों की एक लंबी यात्रा है।

पंजाब से जुड़े व्यापक भौगोलिक क्षेत्र में दक्षिण एशिया की प्राचीन सभ्यताओं के महत्वपूर्ण केंद्र रहे हैं। सिंधु घाटी सभ्यता से जुड़े हड़प्पा जैसे स्थलों से प्राप्त मुहरें, मिट्टी के बर्तन, मूर्तिकाएँ, आभूषण और सजावटी वस्तुएँ प्राचीन मनुष्य की विकसित कलात्मक सोच का प्रमाण देती हैं। पशुओं, पौधों, ज्यमितीय आकृतियों और विभिन्न प्रतीकों का सुंदर प्रयोग यह दर्शाता है कि उस समय के लोगों में रूप, अनुपात और डिजाइन की गहरी समझ थी।

यह कला ऐतिहासिक रूप से उचित नहीं होगा कि सिंधु घाटी की कला को आधुनिक अर्थों में "पंजाबी चित्रकला" कहा जाए। लेकिन पंजाब क्षेत्र की यह पुरातात्विक विरासत बाद की कलात्मक परंपराओं की महत्वपूर्ण सांस्कृतिक पृष्ठभूमि अवश्य बनती है। प्राचीन मुहरों और बर्तनों पर बने प्रतीक यह बताते हैं कि दृश्य चित्रन पहचान, विश्वास और सामाजिक अर्थों को व्यक्त करने का माध्यम थे।

धर्म, आस्था और कला पंजाब की कलात्मक यात्रा में धर्म और आस्था की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हिंदू, बौद्ध, जैन, इस्लामी और बाद में सिख परंपराओं ने अलग-अलग कालखंडों में इस क्षेत्र की कला को प्रभावित किया। धार्मिक संस्थानों और स्थलों ने मूर्तिकला, हस्तलिखित ग्रंथों की सजावट, वास्तुकला और चित्रकला के विकास के लिए अवसर प्रदान किए। चित्र अक्सर धार्मिक कथाओं और घटनाओं को लोगों तक पहुंचाने का माध्यम बने। इस प्रकार कला केवल सौंदर्य की वस्तु नहीं रही, बल्कि ज्ञान और स्मृति को सुरक्षित रखने का साधन भी बनी।

सिख धर्म के उदय और विकास के साथ पंजाब में एक नई सांस्कृतिक और दृश्य परंपरा विकसित हुई। सिख गुरुओं, सिख इतिहास, ऐतिहासिक स्थलों, योद्धाओं और महत्वपूर्ण घटनाओं से जुड़े चित्रों ने पंजाब की सामूहिक स्मृति को दृश्य रूप प्रदान किया।

मुगल और क्षेत्रीय प्रभाव मुगल काल का उत्तर भारत की चित्रकला पर गहरा प्रभाव पड़ा।



मुगल कलाकारों ने चित्रांकन में सूक्ष्मता, व्यक्तिचित्र, दरबारी दृश्य, प्रकृति, पौधों और पशुओं के अध्ययन को नई ऊँचाई दी। उनकी कला में बारीक रेखाओं, कोमल रंगों और विस्तृत चित्रण की विशेषता दिखाई देती है।

पंजाब अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण मध्य एशिया, फारसी क्षेत्र और भारतीय उपमहाद्वीप की विभिन्न संस्कृतियों के संपर्क में रहा। इसलिए यहाँ की कला में स्थानीय और बाहरी प्रभावों का सुंदर मेल दिखाई देता है।

इन प्रभावों ने किसी एक शैली को जन्म नहीं दिया, बल्कि एक व्यापक कलात्मक वातावरण तैयार किया, जिसमें स्थानीय परंपराओं के साथ नई तकनीकें और सौंदर्यबोध विकसित हुए। प्राकृतिक दृश्य, इमारतें, फूल, पक्षी, पशु और मानव आकृतियाँ कलाकारों के महत्वपूर्ण विषय बने।

पहाड़ी और सिख चित्रकला पंजाब से लगे पहाड़ी क्षेत्रों में लघु चित्रकला की कई महत्वपूर्ण शैलियाँ विकसित हुईं। व्यापक पहाड़ी चित्रकला परंपरा में धार्मिक कथाओं, प्रेम, प्रकृति, काव्य और मानवीय भावनाओं को अत्यंत सुंदरता से प्रस्तुत किया गया।

कांगड़ा शैली में प्राकृतिक दृश्यों और मानवीय भावनाओं का अत्यंत कोमल तथा काव्यात्मक चित्रण मिलता है। राधा-कृष्ण, प्रेम-काव्य और पौराणिक कथाएँ इसके प्रमुख विषय रहे।

दूसरी ओर, सिख चित्रकला ने सिख गुरुओं, सिख योद्धाओं, ऐतिहासिक घटनाओं और राजसी जीवन को चित्रों में संरक्षित किया। ये चित्र केवल व्यक्तियों के चित्र नहीं थे, बल्कि इतिहास, वेशभूषा, हथियारों, वास्तुकला और सामाजिक जीवन के दृश्य दस्तावेज भी बने।

महाराजा रणजीत सिंह के समय लाहौर एक महत्वपूर्ण राजनीतिक और सांस्कृतिक केंद्र बना। दरबारों और महत्वपूर्ण घटनाओं के चित्र बनाए गए। इसी दौर में यूरोपीय कलात्मक प्रभाव भी पंजाब तक पहुँचे।

लाहौर: कला का महत्वपूर्ण केंद्र पंजाब के सांस्कृतिक इतिहास में लाहौर का विशेष स्थान है।



और त्योहारों से जुड़े कलात्मक रूप पंजाबी लोकजीवन के रंगों को अभिव्यक्त करते हैं। फुलकारी इस विरासत का एक विशिष्ट उदाहरण है। कपड़े पर रंग-बिरंगे धागों से बनाए गए फूलदार और ज्यमितीय नमूने केवल सजावट नहीं हैं, बल्कि पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही रचनात्मकता, धैर्य और सांस्कृतिक स्मृति के प्रतीक हैं।

लोक कला हमें यह भी याद दिलाती है कि कला केवल गैलरियों और संग्रहालयों की वस्तु नहीं है। वह घरों, आँगनों, वस्त्रों, त्योहारों और दैनिक जीवन में भी जीवित रहती है।

प्रकृति और पंजाबी कल्पना पंजाब के कृषि-आधारित जीवन ने यहाँ की कलात्मक कल्पना को गहराई से प्रभावित किया है। गेहूँ के खेत, सरसों के फूल, गाँवों की गलियाँ, पुराने वृक्ष, कुएँ, पशु, कृषि उपकरण और ग्रामीण घर कलाकारों के लिए निरंतर प्रेरणा के स्रोत रहे हैं।

पंजाब की झरूएँ भी रंगों की अपनी कहानी कहती हैं। सरसों का पीला, खेतों का हरा, फसती गेहूँ की सुनहरी आभा, वर्षा के बादल और सर्दियों की धुंध—ये सभी पंजाब के जीवन की दृश्य पहचान का हिस्सा हैं।

ऐतिहासिक रूप से पंजाब से जुड़े पाँच नदियों ने भी यहाँ की सांस्कृतिक कल्पना को प्रभावित किया। पानी केवल भूगोल नहीं था; वह जीवन, उर्वरता, गति और निरंतरता का प्रतीक भी रहा।

आधुनिक पंजाबी चित्रकला का उदय

बीसवीं शताब्दी में भारतीय कला में बड़े परिवर्तन आए। कलाकारों ने पुरानी परंपराओं पर नए प्रश्न उठाने और अभिव्यक्ति के नए रूप खोजने शुरू किए।

पंजाब के कलाकार भी इस व्यापक कलात्मक परिवर्तन का हिस्सा बने। कुछ ने यथार्थवादी चित्रकला को आगे बढ़ाया, जबकि अन्य ने प्रतीकवाद, अनुभव कला और नई तकनीकों के साथ प्रयोग किए।

अब कलाकार के लिए केवल वास्तविकता की नकल करना आवश्यक नहीं था। चित्र किसी विचार, स्मृति, भावना या आंतरिक अनुभव की अभिव्यक्ति भी हो सकता था।

यह परिवर्तन पंजाब में हो रहे

संपादकीय

चिंतन-मनन

चिंतन-मनन

डिजिटल युग ने चित्रकला की परिभाषा और संभावनाओं दोनों को बदल दिया है। पहले कलाकार कैनवास, कागज, रंग और ब्रश पर निर्भर था। आज टैबलेट, कंप्यूटर, डिजिटल ब्रश और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित उपकरण भी कलात्मक सृजन का हिस्सा बन चुके हैं।

डिजिटल तकनीक ने कलाकारों को नई संभावनाएँ दी हैं। चित्रों को बनाना, संपादित करना, पुनरुत्पादित करना और दुनिया भर में साझा करना पहले की तुलना में बहुत आसान हो गया है। इसके साथ मौलिकता, रचनात्मकता और कलाकार की भूमिका से जुड़े नए प्रश्न भी सामने आए हैं। यदि तकनीक कुछ ही क्षणों में चित्र बना सकती है, तो कलाकार की विशिष्टता कहाँ है?

इसका उत्तर शायद केवल तकनीकी कौशल में नहीं, बल्कि कलाकार की कल्पना, अनुभव, उद्देश्य और अर्थ पैदा करने की क्षमता में है।

बदलता ग्रामीण पंजाब पंजाब की दृश्य विरासत को समझने के लिए बदलते ग्रामीण पंजाब को देखना भी आवश्यक है। पुराने मिट्टी के घर, आँगन, पारंपरिक कृषि उपकरण, पुरानी गलियाँ और ग्रामीण जीवन के अनेक रूप तेजी से बदल रहे हैं।

आधुनिक इमारतों, मशीनरी और नई जीवनशैली ने पुराने ग्रामीण दृश्यों को बदल दिया है। इस परिवर्तन के दौर में कला स्मृतियों को सुरक्षित रखने का महत्वपूर्ण माध्यम बन सकती है। किसी पुराने गाँव की गली का चित्र भविष्य में केवल कला की वस्तु नहीं, बल्कि उस दुनिया का दृश्य दस्तावेज हो सकता है जिसे आने वाली पीढ़ियाँ शायद केवल चित्रों और स्मृतियों के माध्यम से ही जानेंगी।

कला: सांस्कृतिक स्मृति का दर्पण कला का एक महत्वपूर्ण कार्य स्मृति को सुरक्षित रखना है। ऐतिहासिक दस्तावेज हमें बताते हैं कि क्या हुआ, लेकिन कला कई बार यह अनुभव करा सकती है कि वह समय दिखाई कैसा देता था। एक व्यक्तिचित्र किसी व्यक्ति का स्वरूप सुरक्षित रखता है। एक ग्रामीण दृश्य पुराने जीवन, वेशभूषा और वातावरण की झलक देता है। धार्मिक चित्र किसी समुदाय की आस्था और इतिहास की दृश्य व्याख्या प्रस्तुत करता है।

पंजाब के लिए यह भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस क्षेत्र ने अनेक राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तन देखे हैं। प्राचीन सभ्यता से मध्यकालीन दरबारों तक, सिख इतिहास से औपनिवेशिक काल तक कला का एक महत्वपूर्ण कार्य स्मृति को सुरक्षित रखना है। ऐतिहासिक दस्तावेज हमें बताते हैं कि क्या हुआ, लेकिन कला कई बार यह अनुभव करा सकती है कि वह समय दिखाई कैसा देता था। एक व्यक्तिचित्र किसी व्यक्ति का स्वरूप सुरक्षित रखता है। एक ग्रामीण दृश्य पुराने जीवन, वेशभूषा और वातावरण की झलक देता है। धार्मिक चित्र किसी समुदाय की आस्था और इतिहास की दृश्य व्याख्या प्रस्तुत करता है।

पंजाब के लिए यह भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस क्षेत्र ने अनेक राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तन देखे हैं। प्राचीन सभ्यता से मध्यकालीन दरबारों तक, सिख इतिहास से औपनिवेशिक काल तक

लेखक डॉ. विजय गर्ग, परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

निजी विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा के क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुके हैं। उन्होंने व्यावसायिक पाठ्यक्रमों तक पहुँच बढ़ाई है, नए अकादमिक कार्यक्रम शुरू किए हैं, प्रयोगशालाओं और बुनियादी ढाँचे में निवेश किया है तथा अनुसंधान और नवाचार के लिए नए अवसर पैदा किए हैं। कई स्थानों पर उन्होंने विद्यार्थियों को कृत्रिम बुद्धिमत्ता, जैव-पैथोलॉजी, डेटा विज्ञान, नवीकरणीय ऊर्जा और आधुनिक इंजीनियरिंग जैसे उभरते क्षेत्रों से जुड़ने के अवसर भी प्रदान किए हैं। लेकिन इस विस्तार के साथ एक बड़ी जिम्मेदारी भी जुड़ती है। विश्वविद्यालय केवल डिग्रीयों प्रदान करने वाली संस्था नहीं है। यह जान, वैज्ञानिक अनुसंधान, युवा श्रम और अंततः समाज के भविष्य के निर्माण के लिए प्रेरणा देती है। इसलिए अकादमिक स्वतंत्रता के साथ अकादमिक जिम्मेदारों और वैज्ञानिक महत्वाकांक्षा के साथ जवाबदेही भी आवश्यक है।

विज्ञान को प्रमाण की आवश्यकता होती है विज्ञान की मौल प्रमाण है। वैज्ञानिक दावे परीक्षण योग्य होने चाहिए, अनुसंधान की दिधियों पारदर्शी होने चाहिए, अंशिकता को जिम्मेदारी से उपयोग लेना चाहिए और संश्लेषण को जीव-पक्षता के लिए खुला रहना चाहिए। सरकारी से या निजी, प्रत्येक विश्वविद्यालय की जिम्मेदारी है कि वह इन सिद्धांतों की रक्षा करे। अनुसंधान को केवल प्रकाशित शोध-पत्रों, सम्मेलनों में मगोदारी या घोषित परियोजनाओं की संख्या से नहीं मापा जा सकता। गुणवत्ता उतनी ही महत्वपूर्ण है पितनी मात्रा। एक स्वस्थ अनुसंधान वातावरण शोधकर्ताओं को कठिन प्रश्न पूछने, परिणामों को ईमानदारी से प्रस्तुत करने, सीमाओं को स्वीकार करने और प्रमाण की मौल लेने पर अपनी धारणाओं में सुधार करने के लिए प्रोत्साहित करता है। इसलिए वैज्ञानिक जवाबदेही का आधार एक सरल सिद्धांत है—ज्ञान की खोज, दिखाने की खोज से अधिक महत्वपूर्ण लेनी चाहिए।

इमारतों और शैक्षण से परे

दबाना नहीं जवाबदेही और नियंत्रण में महत्वपूर्ण अंतर है। वैज्ञानिक जवाबदेही का अर्थ यह नहीं है कि शोधकर्ताओं को पहले से तय निष्कर्ष प्रस्तुत करने के लिए कहा जाए। इसके विपरीत, वास्तविक विज्ञान के लिए बौद्धिक स्वतंत्रता आवश्यक है। शोधकर्ताओं को स्थापित विचारों को चुनौती देने, नए प्रश्नों की जाँच करने और ऐसे परिणाम प्रकाशित करने की स्वतंत्रता लेनी चाहिए जो अप्रैक्षित निष्कर्षों से मेल न भी खाते हों, बशर्त वे नैतिक और कानूनी मानकों का पालन करें। जवाबदेही का अर्थ है कि शोधकर्ता यह स्पष्ट कर सके कि अनुसंधान कैसे किया गया, कौन-से प्रमाण उसके निष्कर्षों का समर्थन करते हैं और उसके शोध की सीमाएँ क्या हैं। विश्वविद्यालय को ऐसा वातावरण बनाना चाहिए जहाँ शोधकर्ता कह सकें—“प्रमाण यह दर्शाते हैं”, न कि इस पर यह दबाव से कि वह करके—“संस्था यह दिखाना चाहती है।”

अनुसंधान निधियों का पारदर्शी उपयोग अनुसंधान के लिए पर्याप्त वित्तीय संसाधनों की आवश्यकता होती है। प्रयोगशालाओं, उपकरणों, क्षेत्रीय अध्ययनों, छात्रवृत्तियों और शोध कर्मियों के लिए निवेश आवश्यक है। जब वैज्ञानिक कार्य के लिए सरकारी या निजी वित्तियता का उपयोग किया जाता है, तो पारदर्शिता और भी महत्वपूर्ण हो जाती है।

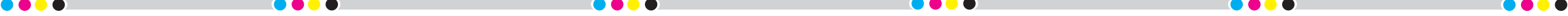
विश्वविद्यालयों में अनुसंधान अनुदान, खरीद, परियोजना व्यय और रिपोर्टिंग के लिए स्पष्ट प्रक्रियाएँ होनी चाहिए। शोधकर्ताओं को अपने संबंधित हितों के उद्घाटन के बारे में भी पारदर्शी रहने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। वित्तीय जवाबदेही और वैज्ञानिक जवाबदेही आपस में जुड़ी हुई हैं। संसंधानों का दुरुपयोग अनुसंधान को कमजोर कर सकता है, जबकि प्साब अनुसंधान प्रक्रियाएँ ज्ञ संसाधनों की कार्य कर सकती हैं जिनका उपयोग महत्वपूर्ण शोध के लिए किया जा सकता था। शिक्षकों की गुणवत्ता महत्वपूर्ण है किसी विश्वविद्यालय की वैज्ञानिक संस्कृति उसके शिक्षकों से बहुत प्रभावित होती है।



इसलिए नियुक्ति और पदोन्नति में विषय विशेषज्ञता, अध्ययन क्षमता, अनुसंधान की गुणवत्ता, नैतिक आवश्यक और वास्तविक अकादमिक योगदान को महत्व दिया जाना चाहिए। केवल प्रकाशित शोध-पत्रों की संख्या किसी विद्वान के योगदान की पूरी तस्वीर प्रस्तुत नहीं करती। शिक्षकों को अपने विषय से लगातार जुड़े रहने, नया ज्ञान प्राप्त करने और कक्षा-शिक्षण को अपने विषय के समकालीन विकास से जोड़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इसके साथ ही विश्वविद्यालयों को शिक्षकों के व्यावसायिक विकास के लिए प्रेरित अवसर भी उपलब्ध कराने चाहिए। जवाबदेही के साथ संस्थानिक सख्योय भी आवश्यक हैं। विद्यार्थी वैज्ञानिक शिक्षा के सलगामी बने विद्यार्थियों को केवल शिक्षा के उपयोग के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, वे अकादमिक प्रक्रिया के सक्रिय सहभागी हैं। प्रयोगशाला कार्य, अनुसंधान परियोजनाएँ, सेमिनार और कक्षा-वर्गों जिज्ञासा तथा स्वतंत्र चिंतन को प्रोत्साहित करने वाली होनी चाहिए। विद्यार्थियों को प्रमाण और राय, विश्वसनीय सूचना और बलत सूचना, वैज्ञानिक अनुविश्वता और बिना प्रमाण के दावों के बीच अंतर समझना चाहिए। निजी विश्वविद्यालयों के पास ऐसी पीढ़ी तैयार करने का अवसर है जो केवल वैज्ञानिक तथ्यों को याद न करे, बल्कि यह भी समझे कि वैज्ञानिक ज्ञान कैसे निर्मित और परखा जाता है, यह आज के समय में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है,

जिम्मेदार वैज्ञानिक शिक्षा के महत्वपूर्ण अंग हैं। विद्यार्थियों को किसी प्रयोग को जल्दी पूरा करने के लिए सुरक्षा से समझा देने के बजाय के लिए को प्रोत्साहित नहीं किया जाना चाहिए। सुरक्षा की संस्कृति मानव जीवन, वैज्ञानिक अनुशासन और पेशेवर जिम्मेदारी के प्रति सम्मान को दर्शाती है। मान्यता और भारी समीक्षा स्वतंत्र मूल्यांकन संस्थागत जवाबदेही को मजबूत कर सकता है। मान्यता और भारी अकादमिक समीक्षा विश्वविद्यालयों को अपनी कमियों की पहचान करने, अध्ययन और अनुसंधान प्रक्रियाओं में सुधार करने तथा प्रेरित भावना को बनाए रखने में सहायता कर सकती है। ऐसी प्रक्रियाओं का उद्देश्य केवल कामजी कार्रवाई नहीं, बल्कि वास्तविक सुधार लेना चाहिए। विश्वविद्यालयों को विश्वसनीय भारी समीक्षा और रचनात्मक आलोचना का स्वागत करना चाहिए, क्योंकि इससे संस्थाओं को अधिक मजबूत बनाने में सहायता मिल सकती है। व्यावसायिक समताता और अकादमिक उद्देश्य निजी विश्वविद्यालय एक वित्तीय वातावरण में काम करते हैं। निवेश, बुनियादी ढाँचा, विद्यार्थी नामांकन और वित्तीय स्थिरता संस्था के लिए निरर्थक विषय हैं। विश्वविद्यालयों को जिम्मेदार AI प्रयोग के लिए स्पष्ट और समय के साथ विकसित होने वाली नीतियाँ बनानी चाहिए। विद्यार्थियों को समझना चाहिए कि किसी तकनीकी उपकरण का उपयोग करने से अंतिम कार्य की जिम्मेदारी समाप्त नहीं हो जाती। शोधकर्ताओं को AI द्वारा तैयार की गई जानकारी को भी सतर्कता के साथ चाहिए और यह नहीं मानना चाहिए कि स्वचालित प्रणाली हमेशा सही होती है। विज्ञान में अवश्य के उतर आवश्यक रूप से सही उतर नहीं होता। प्रयोगशालाएँ सुरक्षा और सीखने के केंद्र हैं वैज्ञानिक जवाबदेही प्रयोगशाला सुरक्षा तक भी विस्तृत होती है। उचित प्रशिक्षण, उपकरणों का रखरखाव, अपशिष्ट प्रबंधन, रसायनों का सुरक्षित प्रयोग, जैविक सुरक्षा और आपातकालीन प्रक्रियाएँ

परिसर में बिताए वर्षा से कहीं आगे तक जाता है। उसे की राह अनुसंधान का भविष्य इस बात पर अधिक निर्भर करना कि विश्वविद्यालय नवाचार को जिम्मेदारी के साथ किसे प्रकाश में लाए हैं। निजी विश्वविद्यालयों में भारत के वैज्ञानिक और शैक्षिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देने की क्षमता है। वे उन्नत अनुसंधान केंद्र स्थापित कर सकते हैं, उन्नतिता को बढ़ावा दे सकते हैं, अंतरराष्ट्रीय सहयोग बढ़ा सकते हैं, विभिन्न विषयों के बीच अनुसंधान को प्रोत्साहित कर सकते हैं और विद्यार्थियों को ऐसे अवसर प्रदान कर सकते हैं जो पहले सीमित थे। लेकिन विकास के साथ मानव की सेने चाहिए। वैज्ञानिक जवाबदेही नवाचार का विशेष नहीं करती; यह उसकी रक्षा करती है। यह अकादमिक स्वतंत्रता को कमजोर नहीं करती; बल्कि स्वतंत्रता को जिम्मेदार आधार प्रदान करती है। यह अनुसंधान को रोकती नहीं, बल्कि अनुसंधान में जनता के विरवास को मजबूत करती है। एक सफल निजी विश्वविद्यालय का उद्देश्य केवल शानदार बुनियादी ढाँचा, बड़ी विद्यार्थी संख्या या कार्यक्रमों रैंकिंग से लेना चाहिए। उसकी वास्तविक उपलब्धि ऐसा अकादमिक वातावरण बनाना लेना चाहिए जहाँ ज्ञान की खोज ईमानदारी से हो, प्रमाण का सम्मान किया जाए, प्रश्नों को प्रोत्साहित किया जाए, अनुसंधान नैतिक तरीके से किया जाए और जिम्मेदारी को वैज्ञानिक स्वतंत्रता से अलग न किया जाए। विश्वविद्यालय का अंतिम मूल्यांकन केवल इस बात से नहीं लेना चाहिए कि उसके पास क्या है, बल्कि इस बात से भी लेना चाहिए कि वह ज्ञान, विद्यार्थियों और समाज के लिए क्या योगदान देता है। निजी विश्वविद्यालयों के पास वैज्ञानिक प्रगति के महत्वपूर्ण केंद्र बनने का बड़ा अवसर है। इस अवसर के साथ एक महत्वपूर्ण दायित्व भी जुड़ा है—प्रमाण, नैतिकता, अकादमिक मानकों और समाज द्वारा दिए गए विश्वास के प्रति जवाबदेह रहना।



वैदिक परम्परा के संरक्षण की ओर सार्थक पहल - हरदोई में त्रैमासिक निःशुल्क पौरोहित्य प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ

उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ के तत्वावधान में विशाला देवी इंटर कॉलेज में वैदिक मंत्रोच्चार के साथ हुआ शुभारंभ, ग्रामीण अंचल के युवाओं को मिलेगा शास्त्रीय कर्मकाण्ड का प्रशिक्षण

रिपोर्ट विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र हरदोई/इटौंजा।

भारतीय वैदिक परंपरा एवं संस्कृत संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन की दिशा में उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ द्वारा एक महत्वपूर्ण पहल करते हुए त्रैमासिक निःशुल्क पौरोहित्य प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ किया गया।
मुख्य तथ्य एवं कार्यक्रम विवरण:
- स्थान व तिथि: विशाला देवी

इंटर कॉलेज, इटौंजा, पवांया, हरदोई में 21 सितंबर को शुभारंभ
- आयोजक: उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ के तत्वावधान में
- शुभारंभ विधि: वैदिक परंपरा के अनुसार मंत्रोच्चारण एवं मंगलाचरण के साथ
- प्रशिक्षण का उद्देश्य: प्रतिभागियों को पौरोहित्य कर्म, वैदिक संस्कारों, षोडश संस्कार, पूजा-पद्धति, यज्ञ, संध्या वंदन एवं धार्मिक अनुष्ठानों से संबंधित विषयों का शास्त्रीय प्रशिक्षण प्रदान करना।

- **प्रशिक्षक एवं प्रबंधन:**
- प्रशिक्षक: श्री वेद प्रकाश शुक्ला - वैदिक कर्मकाण्ड विशेषज्ञ
- प्रबंधक: श्री उमा शंकर त्रिवेदी
- प्रधानाचार्य: श्री अरविन्द कुमार पाण्डेय, विशाला देवी इंटर कॉलेज
- **संस्थागत मार्गदर्शन**

(ऑनलाइन जुड़ाव):
- निदेशक श्री प्रमोद कुमार गुप्त, उ.प्र. संस्कृत संस्थान
- श्री महेंद्र कुमार पाठक एवं श्री शिवम कुमार गुप्ता ने ऑनलाइन माध्यम से शुभकामनाएं एवं मार्गदर्शन प्रदान किया।
संपादकीय टिप्पणी: ग्रामीण क्षेत्र में इस प्रकार के निःशुल्क प्रशिक्षण शिविर न केवल बेरोजगार युवाओं को स्वावलंबी बना रहे हैं, बल्कि लुप्त हो रही पौरोहित्य परम्परा को वैज्ञानिक और शास्त्रीय रूप से नई पीढ़ी तक पहुंचा रहे हैं। रविद्या ददाति विनयंरे के मंत्र के साथ यह शिविर संस्कृत को केवल भाषा नहीं, बल्कि संस्कार के रूप में स्थापित करने का प्रयास है। समापन अवसर पर संस्थान के अधिकारियों, विद्यालय प्रबंधन एवं प्रशिक्षक के प्रति आभार व्यक्त किया गया।



कानपुर में भाजपा को भारी झटका ,बिदूर विधानसभा के अजीत तिवारी पदाधिकारी समेत दर्जनों बसपा में शामिल



रिपोर्ट सुनील बाजपेई, परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक कानपुर

यहां भारतीय जनता पार्टी कोभारी झटका लगा है। पदाधिकारी समेत उसके दर्जनों कार्यकर्ता बहुजन समाज पार्टी में शामिल हो गए हैं। मंडल कार्यालय नवीन मॉकेंट में मुख्य अतिथि पूर्व एमएलसी नौशाद अली, मुख्य मंडल प्रभारी कानपुर लखनऊ मंडल सूरज सिंह जाटव की उपस्थित में बिदूर विधानसभा निवासी अजीत तिवारी,पूर्व क्षेत्रीय मीडिया प्रभारी किसान मोर्चा/चार बार मंडल प्रभारी व श्रीमती काजल तिवारी जिला मंत्री भाजपा महिला मोर्चा कानपुर ग्रामीण, अनिल बाजपेयी पूर्व मंडल मंत्री

भाजपा/जिला सह संयोजक बृथ अध्यक्ष अजय पासवान बृथ अध्यक्ष भाजपा श्री राम तिवारी बृथ अध्यक्ष भाजपा बबलू तिवारी, पूर्व उपाध्यक्ष भाजपा राजू पाल एवं धर्मेन्द्र यादव बृथ अध्यक्ष भाजपा ने सैकड़ों कार्यकर्ताओं के साथ भाजपा को छोड़कर बहुजन समाज पार्टी की सदस्यता ली। जिलाध्यक्ष कुलदीप कुमार एडवोकेट की अध्यक्षता में हुए इस कार्यक्रम में मण्डल प्रभारी राम शंकर कुरील, जीवन लाल भारती, सुनील भारती, कुंवर सिंह राना, देवीतिवारी, पूर्व महानगर अध्यक्ष राम नारायण निषाद, पूर्व मंडल प्रभारी मोहन

मिश्रा, कुलदीप भदौरिया पूर्व प्रत्याशी प्रवीण मिश्रा, जिला पंचायत सदस्य सलमान कुरैशी, पंकज दीक्षित, रमेश कमल, नत्थू लाल दिवाकर देशराज बाल्मीकि, मोहित कठेरिया, बबलू चौधरी, पूर्व जिला अध्यक्ष असलम राज पूर्व मंडल संयोजक हरि किशन, जे डी गौतम, राम चन्द्र भारतीय, परसुराम प्रेमी, पंकज ,जगत बाल्मीकि, अंकित दीक्षित, नरेशा कुरील, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष विजय राना, सतेन्द्र, धर्मेन्द्र गौतम सूरज गौतम, विपिन भारती, ईश्वर चंद्र, कु.गुडिया, श्रीमती आशा और श्रीमती रामरानी सहित तमाम कार्यकर्ता मौजूद रहे।

रिपोर्ट विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

सेवा पखवाड़ा के तहत भाजपा नेताओं एवं कार्यकर्ताओं ने पौधे लगाकर पर्यावरण संरक्षण का लिया संकल्प

गया। भारतीय जनता पार्टी द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित सेवा पखवाड़ा के तहत “हर एक पेड़ भारत माता के नाम” अभियान के अंतर्गत अनीश पंकज विधि महाविद्यालय में वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में भाजपा के वरिष्ठ नेता डॉ. मनीष पंकज मिश्रा सहित पार्टी के नेताओं, कार्यकर्ताओं, छात्रों एवं महाविद्यालय परिवार के सदस्यों ने पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया।

इस अवसर पर उपस्थित लोगों ने अधिक से अधिक पौधे लगाने तथा लगाए गए पौधों की नियमित देखभाल करने का संकल्प लिया। भाजपा नेताओं ने कहा कि वृक्ष पर्यावरण संतुलन के साथ-साथ आने वाली पीढ़ियों के सुरक्षित और स्वस्थ भविष्य की महत्वपूर्ण



आधारशिला है। पेड़ ऑक्सीजन उपलब्ध कराने, वायु प्रदूषण कम करने, जल संरक्षण तथा जलवायु संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भाजपा के वरिष्ठ नेता डॉ. मनीष पंकज मिश्रा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर देशभर में “एक पेड़ माँ के नाम” अभियान के माध्यम से लोगों को प्रकृति और पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार बनने के

गहरे दबाव के प्रभाव से समुद्र अशांत, बीच समुद्र में फंसा ट्रॉलर; आर्यपल्ली समुद्री जेटी में नाव डूबी

मनोरंजन शासमल ,स्टेट हेड ओड़िशा
भुवनेश्वर : गहरे दबाव की गति धीमी बनी हुई है। बंगाल की खाड़ी में बना गहरा दबाव पिछले 6 घंटों के दौरान 5 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से पश्चिम दिशा में आगे बढ़ रहा है। यह वर्तमान में दक्षिण-पूर्व कलिंगपट्टनम से करीब 60 किलोमीटर, विशाखापट्टनम से 140 किलोमीटर और गोपालपुर से करीब 150 किलोमीटर दूर केंद्रित है। क्षेत्रीय मौसम विज्ञान केंद्र के अनुसार, यह गहरा दबाव आज शाम तक विशाखापट्टनम और गोपालपुर के बीच तट को पार कर सकता है। इसके प्रभाव से राज्य में भारी बारिश जारी है। गंजाम जिले में रुक-रुककर तेज बारिश हो रही है। छत्रपुर में बारिश के कारण निचले इलाकों में रहने वाले लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया है। लोगों को चक्रवात आश्रय केंद्रों में रखा गया है और उन्हें पका हुआ भोजन भी उपलब्ध कराया जा रहा है। अब तक 6,44 लोगों को स्थानांतरित किया जा चुका है। कुछ स्थानों पर सड़कों पर पानी जमा होने के कारण अग्निशमन विभाग की ओर से पानी निकासी का काम किया जा रहा है। इसी तरह, दिगपहंड़ी इलाके में भी भारी बारिश जारी है। इसके चलते शहर के पुराने बस स्टैंड क्षेत्र में पानी जमा हो गया है। सड़क पर पानी भरने से यातायात प्रभावित हो रहा है। नालियों और गंदे पानी के सड़क पर बहने से अस्वास्थ्यकर स्थिति पैदा हो गई है। स्थानीय लोगों ने पुराने बस स्टैंड जैसे महत्वपूर्ण इलाकों में जलभराव की समस्या के स्थायी समाधान के लिए तत्काल जल निकासी व्यवस्था में सुधार करने की मांग की है। उधर, आर्यपल्ली समुद्री जेटी में एक नाव डूब गई है। स्थानीय मछुआरों द्वारा नाव को निकालने का प्रयास किया जा रहा है। गहरे दबाव के प्रभाव से समुद्र अशांत है और जलस्तर भी बढ़ गया है। मछुआरों ने अपनी नाव जेटी के पास खड़ी कर रखी थी, लेकिन समुद्र की अशांत स्थिति के कारण वह डूब गई।



हर एक पेड़ भारत माता के नाम का संदेश, अनीश पंकज विधि महाविद्यालय में हुआ पौधारोपण

रिपोर्ट विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

सेवा पखवाड़ा के तहत भाजपा नेताओं एवं कार्यकर्ताओं ने पौधे लगाकर पर्यावरण संरक्षण का लिया संकल्प

गया। भारतीय जनता पार्टी द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित सेवा पखवाड़ा के तहत “हर एक पेड़ भारत माता के नाम” अभियान के अंतर्गत अनीश पंकज विधि महाविद्यालय में वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में भाजपा के वरिष्ठ नेता डॉ. मनीष पंकज मिश्रा सहित पार्टी के नेताओं, कार्यकर्ताओं, छात्रों एवं महाविद्यालय परिवार के सदस्यों ने पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया।

इस अवसर पर उपस्थित लोगों ने अधिक से अधिक पौधे लगाने तथा लगाए गए पौधों की नियमित देखभाल करने का संकल्प लिया। भाजपा नेताओं ने कहा कि वृक्ष पर्यावरण संतुलन के साथ-साथ आने वाली पीढ़ियों के सुरक्षित और स्वस्थ भविष्य की महत्वपूर्ण

आधारशिला है। पेड़ ऑक्सीजन उपलब्ध कराने, वायु प्रदूषण कम करने, जल संरक्षण तथा जलवायु संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भाजपा के वरिष्ठ नेता डॉ. मनीष पंकज मिश्रा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर देशभर में “एक पेड़ माँ के नाम” अभियान के माध्यम से लोगों को प्रकृति और पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार बनने के

लिए प्रेरित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि केवल पौधा लगाना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसकी नियमित देखभाल और संरक्षण भी उतना ही जरूरी है। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी माँ, भारत माता अथवा परिवार के किसी प्रिय सदस्य के नाम पर कम से कम एक पौधा लगाकर उसके संरक्षण की जिम्मेदारी निभानी चाहिए। उन्होंने महिलाओं एवं आम

नागरिकों से अपील की कि “एक पेड़ माँ के नाम” अभियान को जन-जन का अभियान बनाएं और अधिक से अधिक पौधे लगाएं। उन्होंने कहा कि सेवा पखवाड़ा केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के प्रति सेवा एवं जिम्मेदारी का संकल्प है। कार्यक्रम में भाजपा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य राजेंद्र प्रसाद, अधिवक्ता संतोष ठाकुर, राणा रणजीत सिंह, गोपाल यादव, दीपक

पांडे, संतोष सिंह, राजेश चौधरी, रामप्रवेश सिंह, आकाश गिरी, अजय नारायण सिंह उर्फ मुन्ना जी, श्याम किशोर मिश्रा, संतोष कुमार, महेश मिश्रा, सुनील मिश्रा, मिहिर कुमार, सुधीर कुमार, महेश यादव, बबलू गुप्ता, मट्टू कुमार, महेश मिश्रा, आकाश कुमार, विकास कुमार सिंह सहित कई छात्र एवं महाविद्यालय परिवार के सदस्य उपस्थित रहे।

ट्रंप बनाम मीडिया: अमेरिका में प्रेस स्वतंत्रता की सबसे बड़ी जंग



प्रतिबंध, बहिष्कार और 'ट्रंप टीवी' की लॉन्चिंग से लोकतंत्र के चौथे स्तंभ पर उठे गंभीर सवाल - मामला 23 सितंबर को संघीय न्यायालय में प्रस्तावना - लेखक : एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी, परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक गोंदिया, महाराष्ट्र

लोकतंत्र में सत्ता और स्वतंत्र पत्रकारिता का संबंध केवल समाचार देने-लेने तक सीमित नहीं, बल्कि नागरिकों के सूचना के अधिकार और शासन की जवाबदेही से सीधा जुड़ा है। अमेरिका जैसे दुनिया के सबसे पुराने लोकतंत्र में सितंबर 2026 में छिड़ा राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और मुख्यधारा मीडिया के बीच टकराव इसी कसौटी पर वैश्विक बहस का विषय बन गया है।
घटनाक्रम - तथ्यवार:
18 सितंबर : राष्ट्रपति ट्रंप ने सीएनएन, एमएस नाउ और पोलिटिको को व्हाइट हाउस से प्रतिबंधित करने की घोषणा की। आरोप - झूठी और मनगढ़ंत खबरें प्रकाशित करना।
19 सितंबर : तीनों संस्थानों के पत्रकारों को व्हाइट हाउस में प्रवेश से रोका गया, उनके प्रेस प्रवेश-पत्र



निष्क्रिय किए गए।

21 सितंबर : व्हाइट हाउस की पूल कवरज व्यवस्था टप। एबीसी, सीबीएस, सीएनएन, फॉक्स और एनबीसी की बारी-बारी से राष्ट्रपति कार्यक्रमों की दृश्य सामग्री उपलब्ध कराने की परंपरागत व्यवस्था रुकी। सीएनएन पहले से प्रतिबंधित था, शेष समूहों ने साझा व्यवस्था से हाथ खींचा।
21 सितंबर : व्हाइट हाउस ने रट्रंप टीवी: द एंसेंशियल्स स्टेशनर नाम से 24 घंटे का डिजिटल प्रसारण मंच शुरू किया। यह पारंपरिक चैनल नहीं, बल्कि इंटरनेट आधारित प्लेटफॉर्म है, जिस पर राष्ट्रपति के भाषण, प्रशासनिक घोषणाएं सीधे जनता तक पहुंचाई जा रही हैं।
23 सितंबर : संघीय न्यायालय में तत्काल राहत पर सुनवाई निर्धारित।
मुख्य बिंदु - संवैधानिक

और लोकतांत्रिक कसौटी पर:
1. प्रथम संशोधन बनाम प्रशासनिक अधिकार: अमेरिकी संविधान के प्रथम संशोधन में प्रेस स्वतंत्रता की विशेष संरक्षण प्राप्त है। व्हाइट हाउस का तर्क है कि व्हाइट हाउस में प्रवेश अधिकार नहीं, बल्कि विशेष सुविधा है, जिसे सुरक्षा कारणों से नियंत्रित किया जा सकता है। वहीं मीडिया संस्थानों का तर्क है कि यह प्रतिबंध खबरों की विषयवस्तु था? क्या अचानक पास निष्क्रिय करना उचित प्रक्रिया का उल्लंघन है? और क्या सामान्य रूप से प्रेस के लिए खुले

क्षेत्र में विचार के आधार पर भेदभाव संवैधानिक है?
3. ट्रंप टीवी का संदेश: जब स्वतंत्र मीडिया और सरकार के बीच संवाद बाधित हुआ, तो सरकार ने अपना सीधा माध्यम खड़ा कर दिया। यह अपने आप में असंवैधानिक नहीं, लेकिन लोकतंत्र में सरकार के दावों की स्वतंत्र जांच का अवसर भी उतना ही जरूरी है।
4. मानवाधिकार परिप्रेक्ष्य: संयुक्त राष्ट्र के सार्वभौमिक मानवाधिकार घोषणापत्र में अधिकार माना गया है। अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार अभिव्यक्ति पर किसी भी प्रतिबंध के लिए कानून, वैध उद्देश्य, आवश्यकता और अनुपातिकता की कसौटी जरूरी है।
निष्कर्ष: यह विवाद केवल

ट्रंप और तीन संस्थानों का नहीं है। यह तय कराने कि सत्ता की आलोचना करने वाले पत्रकारों की सरकारी संस्थानों तक पहुंच किस आधार पर तय होगी। सीएनएन, एमएस नाउ और पोलिटिको ने संयुक्त रूप से अदालत का दरवाजा खटखटया है और पहुंच बहाल करने की मांग की है। प्रशासन ने अपना पक्ष रखा है। राष्ट्रपति ने 22 सितंबर को संकेत दिया कि यदि अदालत खिलाफ फैसला देती है तो वे प्रवेश पर पुनर्विचार करेंगे।
अंततः लोकतंत्र की शक्ति केवल चुनाव में नहीं, बल्कि उस वातावरण में है जहाँ नागरिक को सत्ता के पक्ष और उसके आलोचक, दोनों से तथ्य प्राप्त करने की स्वतंत्रता हो। इसकी अंतिम सीमा कानून, संविधान और न्यायिक समीक्षा ही तय करेगी।



रिपोर्ट डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

वृन्दावन। सेवाकुंज - इमलीतला स्ट्रीट स्थित आचार्य पीठ में श्रीमद् भागवत सेवा संस्थान (रजि.) के द्वारा चल रहे 52वें अष्ट दिवसीय श्रीमद्भागवत जयंती एवं श्रीराधा जन्म महोत्सव के पांचवें दिन युवराज वेदांत आचार्य के द्वारा देश-विदेश से आए समस्त भक्तों-श्रद्धालुओं को श्रीराधा तत्व की महिमा श्रवण कराई गई। इसांय काल श्रीहनुमद् आराधन मण्डल (रजि.) के द्वारा संगीतमय सुन्दर कांड का सामूहिक पाठ किया गया। साथ ही श्रीहनुमानजी महाराज की आरती की गई। इस अवसर पर आचार्य पीठाधीश्वर र्भागवत भूषण स्वामी यदुनंदनाचार्य महाराज ने कहा कि श्रीहनुमानजी महाराज समस्त सद्गुणों की खान हैं। उनमें वीरता, स्वामी भक्ति, बुद्धि-ज्ञान आदि का

भंडार है। जो व्यक्ति जिस कामना से उनकी पूजा-अर्चना करता है, उसकी कामना वै निश्चित ही पूर्ण करते हैं। वानप्रस्थ धाम के संस्थापक डॉ. चतुर नारायण पाराशर एवं रं धर्म रत्नर स्वामी बलरामाचार्य महाराज, ने कहा कि सुंदरकांड का पाठ सभी प्रकार की बाधाओं को दूर करने वाला है। इस पाठ को करने से श्रीहनुमानजी महाराज शीघ्र ही प्रसन्न होकर भक्तों को मनवांछित फल प्रदान करते हैं। साहित्य संस्कृति मनीषी रघूपी रत्नर डॉ. गोपाल चतुर्वेदी एवं आचार्य नेत्रपाल शास्त्री ने कहा कि श्रीहनुमानजी महाराज भक्त शिरोधार्य हैं। इकलिकाल में श्रीहनुमानजी की आराधना के बिना भगवान श्रीरामजी की भक्ति प्राप्त कर पाना असम्भव है। कार्यक्रम के संगीताचार्य देवकीनंदन शर्मा, पण्डित श्याम सुन्दर ब्रजवासी

आदि ने श्रीराधा जन्म की बधाईयों व भजनों का संगीत की मुद्दुल स्वर लहरियों के मध्य गायन कर सभी को भाव-विभोर कर दिया। इस अवसर पर आचार्य घनश्याम दुवे, शिवांशु भाई मिश्र, आचार्य हरिहर मुद्गल, भागवताचार्य कमल नयन महाराज, डॉ. ऋषि तिवारी, भागवत विदुषी श्रीहरि वर्मा कौशल, श्रीमती पिंगी द्विवेदी, आचार्य करुणा शंकर त्रिवेदी, डॉ. राधाकांत शर्मा, आचार्य युगल किशोर कटारे, आचार्य चैतन्य किशोर कटारे, आचार्य अंकित कृष्ण शास्त्री, आचार्य रवीन्द्र पाराशर, भूति कृष्ण महाराज, पण्डित धर्मवीर शास्त्री, रासाचार्य स्वामी रामशरण शर्मा, स्वामी प्रेमचन्द्र तिवारी, डॉ. रामदत्त मिश्र, आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। तत्पश्चात सन्त, विप्र, ब्रजवासी सेवा एवं वृहद भंडारा भी हुआ।

